मेरे
बाबूजी महाराज

निजी उपयोग के लिए

प्रस्तुति : श्री पुरुषोत्तम धोंडिबा गायकवाड
पुणे (महाराष्ट्र)
दि. ३० - ०४ - २०१९

प्रस्तावना : अध्यक्ष, योगाश्रम कमिटी
धारवाड़ (कर्नाटक)

प्रस्तावना

ईश्वर की सूक्ष्म संकल्पना को समझने और समझाने का अनेक दार्शनिकों और विद्वानों ने प्रयत्न किया है । परन्तु 'वह' सारी व्याख्याओं और वर्णनों के परे रहा है । 'वह' सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी ईश्वर जो इन्द्रियों के परे है, उसे इन्द्रियों द्वारा कैसे जाना जा सकता है या उसे कैसे शब्दों में बांधा जा सकता है ? पूज्य श्री रामचन्द्रजी महाराज (शाहजहाँपुर, उ. प्र.) का कहना न्यायोचित है कि "ईश्वर की व्याख्या नहीं की जा सकती । सारी व्याख्याओं के बाद जो बचता है वो ईश्वर है ।" ईश्वर, समझ (मानव समझ) के परे है और वह वर्णनातीत है । 'वह' एक अनुभूति की बात है और व्यक्तिगत अनुभव औरों के फायदे के लिए साझा किये जा सकते हैं ।

एक अभ्यासी भाई का अपने अनुभवों को औरों से बाँट लेना एक मौलिक सेवा है । इस पुस्तक 'मेरे बाबूजी महाराज' में श्री पी. डी. गायकवाड, पुणे, जो एक सीनियर अभ्यासी तथा प्रिसेप्टर हैं, पूज्य श्री रामचन्द्रजी महाराज, शाहजहाँपुर, जिन्हें हम प्यार से 'बाबूजी' बुलाते हैं, के सम्पर्क के दौरान हुए अपने व्यक्तिगत अनुभवों को बयान करते हैं ।

सरल तथा सुबोध शैली में किया घटनाओं का वर्णन उनकी यथार्थता की प्यास तथा पूज्य सद्गुरु श्री बाबूजी महाराज के प्रति उनकी भक्ति को दर्शाता है । जबकि पूज्य सद्गुरु की सूक्ष्म तथा अनुपम शैली युवा मुमुक्षुओं की, प्रेम और देख-भाल के साथ, ध्येय की ओर मार्गदर्शन करती है । इस पुस्तक की हर घटना से सहज मार्ग के अभ्यासी को कुछ विशेष सन्देश पहुँचता है । जैसे, भाई गायकवाड ने उनकी पहली भेंट के बाद बिदाई लेते हुए बाबूजी के चरणस्पर्श करने पर अशुपूर्ण नेत्रों से कहा, "बाबूजी, मैं आपसे बहुत

दूर रहता हूँ, मेरा ख़याल रखिएगा ।" बाबूजी ने मुस्कुराते हुए कहा, "अरे, फासले की दूरी थोड़े ही दूरी है, लगाव बढ़ाओ ईश्वर से" । भाई गायकवाड कुछ कह न पाये और भरे हृदय से चल पड़े । परन्तु दिल के आंसू और मालिक के नाम एक सच्ची पुकार कभी भी व्यर्थ नहीं जाती । दो एक साल में श्री गायकवाड का आश्चर्यकारक तबादला सोलापुर से R.E.C Ltd नई दिल्ली को हुआ । वे वहाँ 33 साल रहे और 2005 में उनकी निवृत्ती तक शाहजहाँपुर कई बार जा चुके ।

श्री बाबूजी महाराज ने कहा है कि, "बहुत लोग मुझे देखने के लिए आते हैं लेकिन बहुत थोड़े ही मुझे देख पाते हैं ।" सैकड़ों अभ्यासी पू. बाबूजी की कृपा को पाने के लिए उनके पास पहुँचते थे लेकिन बहुत थोड़े ही 'उस' सरलता के पीछे छिपी 'दिव्यता' का अनुभव कर पाये । श्री पी. डी. गायकवाड, उन थोड़े अभ्यासियों में से एक हैं । 1970 की शाहजहाँपुर की उनकी पहली मुलाकात में वे अपने मालिक का ध्यान आकर्षित कर सके और उनके स्नेह तथा प्यार को पा सके । उनकी गुरु महाराज के प्रति लगन और प्यार, पुस्तक की अलग अलग घटनाओं में प्रतीत होती है ।

उनकी बाबूजी महाराज में श्रद्धा और विश्वास का यह प्रमाण है कि उन्होंने एक बड़े सीनियर प्रिसेप्टर से कहा कि, मेरे गुरु महाराज भगवान कृष्ण से भी बड़े हैं । जिसे सुनने पर बाबूजी महाराज ने उनको समझाया कि, "अरे, तुम्हे कहना था कि स्वामी विवेकानंद ने कहा है, कि अपने गुरु को ब्रह्म समझो ।" और अपना निज रूप प्रकट किया कि, "मैं वह हूँ ।" ऐसे प्रकटीकरण मालिक ने कई बार किये जिनका वर्णन इस पुस्तक में आया है ।

भाई गायकवाड को हमारे कई सीनियर प्रिसेप्टर, जैसे श्री राघवेन्द्र राव जी, रायचूर, श्री रामचन्द्र रेड्डी जी, कडपा, संत बहन

कस्तूरीजी, लखनऊ, डॉ एस. पी. श्रीवास्तव जी, लखीमपुर खीरी, जस्टिस डी. आर. विठ्ठल राव जी, बैंगलोर और कई अन्य के साथ बहुत निकट सम्पर्क में सालों रहकर ध्येय के प्रति उनके मार्गदर्शन का सौभग्य प्राप्त हुआ है ।

मैं आशा करता हूँ कि यह पुस्तक बहुत से अभ्यासियों को आगे बढ़कर अपने व्यक्तिगत और दिव्य अनुभवों को औरों के साथ साझा करने में प्रोत्साहित कर मार्गदर्शन करेगी । यह पुस्तक 'मेरे बाबूजी महाराज', निश्चित रूप से प्रस्तुत और भावी पीढ़ियों के मुमुक्षुओं की मार्गदर्शक बनेगी । भाई गायकवाड जी को, अपने अनुभव हम सब के साथ साझा करने के लिए धन्यवाद ।

पू. सदगुरु बाबूजी महाराज के चरणकमलों में नमन ।

दि. ३० - ०४ - २०१९

एम्. के. हेगडे
अध्यक्ष
योगाश्रम कमिटी
धारवाड़ (कर्नाटक)

मेरे बाबूजी महाराज

1. पू. श्री बाबूजी के घर 1970 में मैं, मेरे बड़े भाई व मेरी माँ पहुँचे । उस वक़्त रेल रिजर्वेशन का हमें कोई अंदाज नहीं था, इसलिए हम सोलापुर से दौंड, मनमाड, झाँसी, लखनऊ ऐसे गाड़ियाँ बदलते बदलते शाहजहाँपुर पहुँचे और बहुत थके हुए थे । श्री बाबूजी को देखने की बहुत उत्सुकता और आतुरता सी थी । सुबह का समय था । श्री बाबूजी आँगन में आ गये और हम तीनों ने बारी बारी उनके चरण छुए ।

मैंने उनके चरण स्पर्श करके उठकर उनकी तरफ देखा तो उनकी नीली आँखों में खो गया । ऐसा खोया जैसे नीले समुद्र में डूब गया । मेरे सारे शरीर में से एक हल्का सा बिजली का करंट जैसे pass हुआ । मेरे लिए यह एक नया अनुभव था । क्षणभर में मेरी 2 दिन के सफर की सारी थकान दूर हुई ।

2. कुछ देर बाद श्री बाबूजी ने कहा, "देखो हमने नये पाखाने बनाये हैं ।" और मुझे व मेरे भाई को लेकर वे पाखाने दिखाने लगे । मुझे लगा पाखाना में क्या देखना है ? और वे क्यों दिखा रहे हैं ? तीनो पाखाने पास पास ही थे । वह एकदम से बोले, "देखो, लोग इस पाखाने का लोटा दूसरे पाखाने में ले जाते हैं और वहीं छोड़ देते हैं । अब एक में दो लोटे हुए और दूसरे में है ही नहीं ।" तब मुझे पता लगा कि वे हमें ऐसा न करने के लिए सावधान कर रहे हैं ।

3. श्री बाबूजी के बरामदे के साथ एक ही स्नानगृह था । मेरे बड़े भाई पहले नहाने चले गये । और मैं तौलिया हाथ में लेकर उनकी राह देखने लगा कि वो बाहर आएँ, तो मैं नहाने अंदर जाऊँ । इतने में किसी साऊथ इन्डियन अभ्यासी ने बाबूजी से पूछा, "Babuji will there not be meditation today ?" श्री बाबूजी अपनी हमेशा की कुर्सी में बरामदे में बैठे हुए थे । कहा, "I am waiting for Solapur abhyasis." और उन्होंने मेरी तरफ देख कर फरमाया, "क्यों भाई, तुम बाहर स्नान नहीं कर सकते हो क्या ?" आँगनमें कुआँ था और वहाँ बाल्टी, लोटा सब कुछ था । लेकिन मुझे इसका खयाल ही नहीं आया था । मैं एकदम से कुँअे की तरफ गया और हैंड पम्प से पानी निकाल कर नहाना शुरू किया । इसका ख़याल पहले से नहीं आया कि मैं, श्री बाबूजी महाराज को मेरी वजह से देरी कर रहा हूँ । और सद्गुरु को अपने लिए प्रतीक्षा कराना गलत है ।

4. उसके बाद हम सब श्री बाबूजी के कमरे में गये । एक तरफ पुरुषों और दूसरी तरफ बहनों और माताओं की बैठने की व्यवस्था थी । श्री बाबूजी का बैठने का स्थान बीच में था । छोटा सा आसन था । पीछे गऊ तकिया और सामने एक छोटासा लकड़ी का टेबल था । दाहिने हाथ पर एक और लकड़ी का डेस्क सा रखा था । उसपर टेबललँम्प रखा था ।

मैंने श्री बाबूजी से कहा कि, "माँ भी अंदर हैं ।" (स्त्रियों के लिए अंदर की तरफ घर में रहने की व्यवस्था थी ।) "क्या मैं उनको भी पूजा के लिए बुला लाऊँ ?" उन्होंने कहा, "हाँ हाँ बुला लो ।" मैंने माँ को बुलाया और वे भी पूजा में, और माता - बहनों के साथ बैठ गईं । अब मुझे इस बात का पता न था कि Group Meditation में बैठने से पहले माँ को बाकायदा तीन individual

सिटिंग प्रिसेप्टर से दिलाने के पश्चात् ही उनको मुझे Group Meditation में बैठने के लिए इजाज़त पूछनी थी । माँ को यह भी न मालूम था कि ध्यान अपने हृदय में, ईश्वरी प्रकाश है, समझकर करना है । वे तो हमारे साथ North India आकर काशी, मथुरा, वगैरा देखने के लिए आईं थी । क्योंकि पिताजी ने मुझसे कहा था कि तुम इतने दूर जा रहे हो तो 'इनको' काशी, मथुरा इत्यादि दिखा लाओ ।

लेकिन समर्थ सद्गुरु पूज्य श्री बाबूजी महाराज ने उन्हें सामूहिक ध्यान में ही पूजा शुरू करा दी ।

5. पू. बाबूजी महाराज ने हम सब को पूजा कराई । उसके बाद हम सब शांत बैठे हुए थे । श्री बाबूजी एकदम से बोले, "ला इलाहि इल्लल्लाह ।" सन्नाटा छा गया ।

मैं सोचने लगा "अरे यह क्या बला है? अभी तो हम "ईश्वरी प्रकाश हृदय में है" का ध्यान समाप्त कर उठे थे और यह मुसलमानों का वाक्य एकदम से क्यों ?

फिर बाबूजी बोले, "ईश्वर एक है । अनेक देवी देवताओं को पूजने से कुछ नहीं मिलेगा ।" वह एकेश्वरवाद या एक तत्वचिंतन का महत्व बता रहे थे ।

मैंने गहरी साँस ले ली ।

6. जब मैं ध्यान में बैठा तो थोड़ी देर में मुझे एहसास हुआ कि मैं नहीं हूँ लेकिन सिर्फ मेरी आकृती है और उसमें सिर्फ प्रकाश ही प्रकाश है । मुझे बहुत अचंभा लगा । कुछ देर बाद पूजा समाप्त हुई । हम सब लोग बाहर बरामदे में आकर बैठ गये । मैंने बाद में बाबूजी से पूछा कि मुझे प्रकाश का अनुभव हुआ । मुझे बड़ा गर्व

था कि मैंने अपने में प्रकाश का अनुभव किया । श्री बाबूजी सहजता से बोले, "ऐसा तो होने ही वाला है ।"
इसका अर्थ मेरी समझ में न आया । लेकिन कई सालों के बाद जब मैंने बाबूजी के साहित्य में पढ़ा कि, "When matter comes in contact with energy, light is the result", तब मुझे पता लगा कि Divine energy started flowing by His Grace.

7. हमारा प्रोग्राम 3 दिन रहने का था । तीसरे दिन मैंने माँ से कहा कि आज हमें जाना है । वे कहने लगीं कि, "मुझे यहाँ अच्छा लग रहा है, क्या हम एक दिन और नहीं रह सकते ?" मैंने कहा, "मेरी तो हिम्मत नहीं है, आप चाहे तो बाबूजी से पूछ लीजिए ।" वह श्री बाबूजी के पास गई और पूछा कि, "बाबूजी, क्या हम एक दिन और यहाँ रह सकते हैं ?" उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, "हाँ हाँ क्यों नही ।" फिर उन्होंने घर वालों से कहा, "अरे भाई, ये लोग आज यहीं रहेंगे ।" हम एक दिन और रह गये ।

8. उस दिन सोमवार था । सोमवार शाम को शाहजहाँपुर के local अभ्यासी आ जाते और पूजा होती थी । मैंने पूछा, "बाबूजी क्या आज शाम को पूजा होगी ?" श्री बाबूजी ने कहा "हाँ, लेकिन तुम full हो चुके हो ।"

9. इससे पहले माँ ने बाबूजी से कहा, "बाबूजी आप हमें बुला लीजिएगा ।" श्री बाबूजी बोले, "अरे भई हम तो आपको अभी से बुला रहे हैं ।"

10. प्रस्थान करने के दिन मेरी माँ ने और उसके बाद बड़े भाई ने श्री बाबूजी के पैर छुए और वे कमरे से बाहर निकल गये । मैंने भी बाबूजी के चरणस्पर्श किए और कहा, "बाबूजी, हम आप से बहुत दूर रहते हैं, आप हमारा ख्याल रखिए ।" बाबूजी मुस्कुराए और बोले, "अरे फासले की दूरी थोड़े ही दूरी है? लगाव बढाओ ईश्वर से ।" मैं कुछ कह न सका । बड़े भरे हुए हृदय के साथ हम सब चल पड़े ।

11. मैंने श्री बाबूजी से कहा था कि, "हम आपसे बहुत दूर रहते हैं आप हमारा ख़याल रखिएगा ।" लेकिन इस बात को मैं तो भूल गया । लेकिन इस के 2 - 2 ½ साल के बाद (1972 Dec में मैं कोई स्पेशल Qualification के बावजूद) दिल्ली में R.E.C. (Rural Eletrification Corporation) में डेप्युटेशन पर select हुआ । और उस वक़्त पूरे महाराष्ट्र राज्य से मैं एक ही selected व्यक्ति था । इसके बाद 2005 इसवी में मैं R.E.C. Delhi से निवृत्त हुआ ।

12. जब हम पू. बाबूजी के पास पहली बार 1970 में ठहरे हुए थे, मैंने उनसे पूछा, "बाबूजी हमने सुना है कि फतेहगढ़ यहाँ से नजदीक है । क्या हम वहाँ जा सकते हैं ?" उन्होंने कहा, "हाँ, भाई लेकिन वहाँ जानेका रास्ता मुश्किल है ।" पता नहीं क्यों, मैंने इस वाक्य को आध्यात्मिक अर्थ में लिया । मुझे लगा कि बाबूजी कह रहे हैं कि लालाजी के पास पहुँचना मुश्किल है और जब बाबूजी इतने आसानी से उपलब्ध हैं । मुझे कभी फतेहगढ़ जाने का आकर्षण ही पैदा नहीं हुआ । आख़िरकार (46 साल के बाद) सन 2016 में हमारे ग्रुप के सारे अभ्यासी फतेहगढ़ जा रहे थे इसलिए मेरा भी पहली बार, फतेहगढ़ उनके साथ जाना हुआ ।

13. शाहजहाँपुर से लौटने के कई महीनों बाद मेरी माँ ने मुझसे बताया कि शाहजहाँपुर में श्री बाबूजी के पास पूजा करते वक़्त उनको ऐसा लगता था कि जैसे काले पर्दे से सब निकल जा रहे हैं और पूजा के बाद उनको होश नहीं रहता था। वे सीधे घर के अंदर जाकर चारपाई पर सो जाती थी। उनको बहुत हल्कापन महसूस होता था। उन्होंने बताया, शाहजहाँपुर जाने से पहले उनको सारे शरीर में जकड़न सी महसूस होती थी और लगता था कि वह आगे ज्यादा दिन जिन्दा नहीं रहने वाली है। कहने लगीं, "लेकिन अब मुझे बहुत हल्कापन लगता है और मैं आगे और जिन्दा रहूँगी।"

वे उसके बाद 1999 तक जिन्दा रहीं और हमेशा नियमित पूजा, क्लीनिंग, करती रहीं।

14. सन 1972 की बात है। पू. श्री बाबूजी महाराज यूरोप, अमरीका की यात्रा पहली बार करके मुंबई वापिस लौटने वाले थे। मैं श्री बाबूजी के बारे में बहुत गर्व से सोच रहा था कि, मेरे गुरु महाराज विश्व विजय कर लौट रहे हैं। मैं उनका स्वागत कैसे करूँ? क्या सही होगा? इत्यादि। उस वक़्त मेरी posting Solapur में थी।

मैंने पिताजी से बिनती की, कि मुझे बाबूजी महाराज को देने के लिए एक 10 गज की सफेद धोती (पू. बाबूजी 10 गजवाली धोती पहनते थे। साधारणतयः 9 गजवाली और 10 गजवाली धोती बनती है।) और pure silk का 3 गज कपड़ा कुर्ते के लिए चाहिए। वह मुंबई में अच्छी quality का मिलता है। अतः आप मेरे लिए यह खरीद कर दे दें। उन्होंने लाकर दे दिया।

निश्चित तारीख पर, मैं पिताजी के साथ मुंबई पहुँचा। विलेपार्ले में मेरी बहन सौ. शकुंतला रहती थी। मैं वहाँ पहुँचा।

हमारे प्रिसेप्टर श्री बापुभाई देसाई भी विलेपार्ले में ही रहते थे । मैं और पिताजी सवेरे 8 बजे करीब, आदरणीय प्रिसेप्टर श्री बापूभाई जी के घर पहुँचे । श्री बापूभाई करीब 80 साल के थे । वे किसी अभ्यासी भाई को ध्यान करवा रहे थे । उनकी पूजा ख़त्म होने पर मैंने उनसे पूछा कि, "आज श्री बाबूजी विदेश से मुंबई आनेवाले हैं । वे कब आ रहे हैं ? और वे कहाँ ठहरेंगे ?"

बापूभाई बोले, "बाबूजी सीधे मद्रास चले गये हैं । उनका बम्बई आने का प्रोग्राम बदल गया है ।" मैं निराश हुआ । सोलापुर से (करीब 450 km) मैं केवल बाबूजी से मिलने के लिए गया था । मैंने अपनी निराशा व्यक्त की । बापूभाई बोले, "अब आये हो, तो पूजा करके जाओ ।" मैं और पिताजी उनके सामने ध्यान में बैठे । उन्होंने transmission दिया । उसके बाद हम सब बाहरवाले कमरे में आ गये । नाश्ता और चाय भी उन्होंने दिया । बातें शुरू हुअी । श्री बापूभाई बोले, "बाबूजी के पास power तो है लेकिन वह देना नहीं चाहते ।" मैंने कहा, "आप तो प्रिसेप्टर हैं और बाबूजी ने आप को power दिया है । आपने अभी थोड़ी देर पहले मुझे पूजा दी । Transmit किया । आप यह कैसे कह सकते हैं कि बाबूजी power देना नहीं चाहते ? मुझे तो 2 साल हुए अभ्यास शुरू करके । मैं एक साधारण अभ्यासी हूँ । लेकिन मैं बता सकता हूँ कि आपने आज पूजा में क्या क्या किया । मैंने फिर उनको बताया कि उन्होंने पूजा शुरू कैसे की । Transmission शुरू में पूरे हृदय पर था फिर आखिर आखिर में किस point पर transmission focussed था इत्यादि । और उस वक़्त वे मुझसे बात कर रहे थे और transmit भी कर रहे थे । श्री बाबूभाई ने स्वीकार किया । कहा, "ठीक है ।" फिर मैंने कहा कि देखिए बाबूजी ने 1971 में बंगलादेश बना दिया । भारत के साथ युद्ध में पाकिस्तान को बड़ी हार खानी पड़ी थी ।

बापूभाई बोले, "तुम जानते हो कितनी खराबी बंगला war में हुई ? कितने लोग मर गये । कितने अत्याचार औरतों पर हुए । बहुत बहुत ख़राब बातें हुई । यह सब बाबूजी नहीं कर सकते । बाबूजी तो संत है ।"

मैंने कहा, "महाभारत में Lord Krishna ने क्या किया ? क्या वहाँ खूनखराबा न हुआ ? अत्याचार नहीं हुए ? विनाश नहीं हुआ ?" श्री बापूभाई बोले, "नहीं, नहीं, Lord Krishna was Lord, बाबूजी is a Saint, वह यह नहीं कर सकते ।"

मैंने कहा, "My Master is more than Lord Krishna."

वे बोले, "तुम्हें क्या पता है ? तुम बच्चे हो ।" और सही भी, मैं 27 साल का लड़का था । वे 80 साल के अनुभवी बुज़ुर्ग थे । बाबूजी की उम्र भी उस वक़्त 73 साल की थी ।

मैं चुप रहा । उसके बाद मैं सोलापुर वापिस लौटा । अब वह धोती और सिल्क का कपड़ा पू. बाबूजी तक कैसे पहुँचाए ? गुलबर्गा सेंटर, सोलापुर से by train ढाई घंटे का रास्ता था । मैंने सोचा, गुलबर्गा से कोई न कोई, मद्रास जाता होगा । अगर मैं यह चीज़ किसी प्रिसेप्टर के पास पहुँचा दूँ तो वह किसी तरह से बाबूजी तक पहुँचा देंगे । और मैं गुलबर्गा सुबह जाकर शाम तक वापस लौट आऊँगा ।

एक दिन के बाद मैं, बाबूजी की चीजें लेकर आदरणीय प्रिसेप्टर शांताबाई (शान्ताक्का) के घर गुलबर्गा पहुँचा । उनको बताया कि, पू. बाबूजी को देने के लिए यह धोती और कुर्ते का कपड़ा लेकर मैं मुंबई गया था लेकिन भेंट न हो सकी । इसलिये यहाँ आया हूँ, यह सोचकर कि यह मैं आपके सुपुर्द करूँ ताकि कोई अभ्यासी / प्रिसेप्टर यदि Madras जा रहे हों तो उनके हाथ आप यह बाबूजी तक पहुँचाइए ।

वे बोली, "अरे, राघवेंद्रावजी कल यहाँ रायचूर से आये थे । यदि तुम कल आते तो उनके पास दे दिए होते । तुम एक काम करो । यहाँ से रायचूर चले जाओ । पू. राघवेन्द्रावजी से मिलकर उनको दे दो । वे पहुँचा देंगे ।"

मैंने सोचा, "रायचूर यहाँ से 3½ घंटे का रास्ता है । मैं जाकर दे आउँगा और कल वापिस लौटूँगा ।" मैं चल पड़ा । रायचूर पहुँच कर सब बातें राघवेंद्रावजी को बता दी । वे सुनते रहे । फिर बाद में बोले, "देखो, तुम यहाँसे कडप्पा चले जाओ । कडप्पा में श्री रामचंद्र रेड्डी साहब से मिलो । उनसे कहना कि, वे तुम्हें लेकर मद्रास पहुँच जाए और तब तुम खुद बाबूजी को यह कपडे दे दो ।"

मैं विचार में पड गया । कुछ समझ में नहीं आ रहा था । मेरे पास एक दिन के लिए कपडे थे । रूपये भी नहीं थे । मैं गुलबर्गा से वापस लौटने के हिसाब से घर से (सोलापुर) निकला था । मैं राघवेंद्रावजी से कुछ कह भी नहीं पाया । फिर शाम को श्री विठ्ठलरावजी, राघवेंद्रावजी को मिलने आये । वे उन दिनों रायचूर में advocate थे । प्रिसेष्टर थे । और हर रोज शाम को राघवेंद्रावजी से मिलने आते थे । वह जब राघवेंद्रावजी से मिलकर वापिस लौटने लगे तो मैं भी उनके साथ चल दिया । थोड़ी देर चलने के बाद मैंने उनको अपनी समस्या बताई और कहा कि राघवेंद्रावजी मुझे कडप्पा और वहाँ से चेन्नई (Madras) जाने के लिए कह रहे हैं । उन्होंने कहा, "तो जाईए ।" मैंने कहा मेरे पास रुपये भी नहीं हैं । "कितने चाहिए?", उन्होंने कहा । मैंने उनसे रु.100/- ले लिए और कडप्पा के लिए चल पड़ा ।

कडप्पा पहुँचा । आदरणीय रामचंद्र रेड्डी साहब से मुलाक़ात हुई । उन्होंने कहा कि, "बाबूजी महाराज का स्वागत समारोह Madras में होने वाला है, उस वक़्त मुझे वहाँ जाना है । मैं अभी 2 दिन

पहले ही मद्रास से हो कर आया हूँ । अतः मैं आपको मद्रास की train में बिठा दूँगा । आपको उमेशभाई (बाबूजी के सुपुत्र) का पता देता हूँ । आप सीधे वहाँ जाइए ।"

मैं क्या करता ? चल पड़ा । मद्रास पहुँचा । शाम का वक़्त था । स्टेशन पर ही खा कर के मैं श्री उमेश जी के घर के लिए चल पड़ा । घर पहुँचा तो घर पर बाबूजी नहीं थे । सिर्फ श्री जागीरदारजी की और श्री उमेश जी की धर्मपत्नी और कोई दो एक लोग थे । पता लगा कि उसी दिन बाबूजी महाराज का स्वागत समारोह था और सभी उधर ही गये थे । मैं राह देखते बैठ गया ।

कुछ वक़्त के बाद श्री बाबूजी पधारे । साथ में श्री जागीरदारजी, उमेशजी, C. A. राजगोपालाचारीजी आये । श्री जागीरदारजी ने मुझे डाँटा । बोले "क्यों आए ?" वगैरा वगैरा । मैं सहम कर चुप रहा । थोड़ी देर बाद श्री बाबूजी के कमरे में जाने का मौका मिला । मैं अन्दर गया । श्री बाबूजी दो नए तेलगु-भाषी प्रिसेप्टरों को बता रहे थे, "If you come across any person doing black magic, you earth his heart, all his power will go into earth." और किसी वजह से बाबूजी उठकर कमरे से बाहर चले गये । वे दोनों आपस में बात कर रहे थे, "heart को earth करना कह रहे हैं ? पता नहीं कैसे करते हैं ?"

फिर बाबूजी आये और वे दोनो बाबूजी से इजाज़त लेकर चल दिए । श्री बाबूजी और मैं, हम दो ही थे । फिर मैंने बाबूजी को उनके कपडे, जो मैंने लाए थे, दे दिए । श्री बाबूजी को मुंबई से लेकर सारी कहानी सुना दी । मैंने कहा, "बाबूजी मैं आपके preceptor से लड़कर आया हूँ ।" उन्होंने कहा, "क्या हुआ ?" मैंने फिर उनको सब बातें बताई जो श्री बापूभाई देसाई के साथ हुई थी । मैंने बताया, "हमने कहा My Master is more than Lord Krishna."

बाबूजी बोले, "अरे ऐसे नहीं , आपको कहना चाहिए था, कि स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि, Know thy Guru as Brahma."

मैं सुनता रहा । मुझे क्या पता था कि, श्री बाबूजी बापूभाई से नहीं, मुझसे कह रहे थे, 'तुम जो ढूँढ़ रहे हो, वह मैं ही हूँ ।' श्री बाबूजी के highest culture में यह कहाँ बैठता था । लेकिन मेरी मूढ़ अवस्था देखकर practically समझाने के लिए उन्हें मेरे स्तर पर आकर कहना पड़ा । "मैं ही हूँ ।"

आज भी वह सब याद आता है तो आँखे नम होती हैं ।

उसके बाद मैं बाहर gallery में जा बैठा । खाने का वक़्त हुआ था । मुझे खाना नहीं खाना था। पहले ही जागीरदार जी ने डाँट लगाई थी । बाबूजी और सब लोग टेबलपर खाने के लिए बैठे । बाबूजी ने आवाज़ लगाई, "गायकवाड, गायकवाड" मैंने जवाब ही नहीं दिया । खाना हो गया । बाबूजी बाहर आये । बोले, "तुम यहाँ बैठे हो ? चलो आओ ।" फिर वह मुझे डायनिंग टेबल की तरफ ले गये । फिर कहा, "बैठो ।" और कहा, "इनको खाना परोसिए ।" जब तक सारा खाना नहीं परोसा गया, बैठे ही रहे । फिर जब सब परोसा गया तब बोले, "अब खाओ ।" और फिर उठकर कमरे में चले गये ।

कहाँ मिलेंगे ऐसे मातृवत्सल गुरुमहाराज !

15. नवम्बर 1972 की बात है । हम सोलापुर के अभ्यासियों ने भंडारा (Satsang) आयोजित किया था । कर्नाटक, और आंध्र प्रदेश के अभ्यासी भाई-बहन, प्रिसेप्टर आये थे । पू. राघवेंद्रावजी और सर्नाडजी, भी आये थे । कुछ प्रिसेप्टर्स आंध्र प्रदेश से भी आये थे ।

मैं व्यवस्था की देखभाल कर रहा था । श्री राघवेंद्ररावजी ने मुझसे पूछा, "कुछ बिज़ी हो क्या ?" मैंने कहा "नहीं" । बोले; "पूजा में बैठ सकते हो ?" मैं बैठ गया । करीब आधा घंटा पूजा कराने के बाद साथ में तिरुपति के वृद्ध प्रिसेप्टर श्री पुल्लय्या चेट्टी बैठे थे, उनसे राघवेंद्ररावजी ने कहा, "Pullaiah Chetty Garu, I am preparing this young man for Master's work as per the orders of Master."

उसी सत्संग के दौरान मेरे R.E.C. Delhi के डेप्युटेशन के Order आ गये थे । और फिर मैं दिल्ली चला गया ।

1974 में पू. जीज्ञी (कस्तूरी बहनजी) ने एक चिठ्ठी बाबूजी के नाम लिखकर मेरे हाथ शाहजहाँपुर भेजी । बाबूजी ने चिठ्ठी पढ़ी । मुझे पता न था क्या लिखा था उस चिठ्ठी में । बाबूजी बोले, "जिस काम से तुम्हें कस्तूरी ने भेजा है, उसमें अभी वक़्त है ।" बाद में मुझे पता चला कि जीज्ञी ने मुझे preceptor बनाने के लिए बाबूजी से प्रार्थना की थी ।

16. सन 1972 के दिसंबर में मैं रूरल इलेक्ट्रिफिकेशन कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली, के दफ्तर में असिस्टंट प्रोजेक्ट इंजिनिअर के पद पर रुजू हुआ । क्योंकि अभी कुंवारा था, और पैसे भी बचाने थे, इसलिए मैं अपने सीनियर अभ्यासी भाई श्री ए. डी. जोशीजी के घर पर कुछ समय, और, दूसरे सीनियर अभ्यासी भाई श्री सतदेव जी के घर पर कुछ समय रहा ।

क्योंकि जिम्मेदारियाँ कम थी, मैं पू. संत कस्तूरी बहन जी के पास मोदीनगर (उ. प्रदेश) छुट्टियों में अक्सर जाया करता था । एक बार मैं मोदीनगर गया और जीज्ञी (पू. कस्तूरी बहन) के यहाँ बीमार हो गया । बुखार था, और कमज़ोर भी बहुत हो गया था ।

तब जीज्ञी अपनी माताजी, प्रिय भाई प्रहलाद चतुर्वेदी, तथा उनके परिवार, के साथ ही रहती थीं । मोदीनगर जाने से पहले मैंने दिल्ली से पू. बाबूजी को पत्र लिखकर शाहजहाँपुर (उनके पास) जाने की इजाज़त माँगी थी । उसका जवाब कुछ दिनों बाद दिल्ली के पते पर आ गया कि "आ सकते हो ।"

भाई सतदेव जी, जिनके यहाँ मैं दिल्ली में रहता था उन्होंने वह चिट्ठी लाकर मोदिनगर में मुझे दे दी । अब सवाल यह था कि मैं शाहजहाँपुर इस कमज़ोर हालत में जाऊँ या न जाऊँ ? (बुखार तो उतर गया था लेकिन कमज़ोरी बहुत अधिक थी ।) जीज्ञी ने तथा उनकी आदरणीय माताजीने मुझे शाहजहाँपुर उस हालत में न जाने की सलाह दी । मैंने सोचा, कि, पू. बाबूजी की इजाज़त मिली है और अगर मृत्यु ही होती है तो 'उन' के पास जाने पर कम से कम एक अवस्था तो आगे बढकर मिलेगी । फिर अगले जन्म में उस अगली दशा से शुरुआत करूँगा । इसलिए किसी भी तरह मैं पू. बाबूजी के पास शाहजहाँपुर पहुँचूँगा ही ।

मैं शाहजहाँपुर पहुँच गया । पू. बाबूजी महाराज को देखकर मैं बड़ा खुश हुआ । उन दिनों आश्रम नहीं था । इसलिए श्री बाबूजी के घर पर ही ठहरने की व्यवस्था थी । पूजा के कमरे के साथ सटकर जो कमरा है उसमें मैं टिक गया । दिन में श्री बाबूजी के सामने कुर्सी पर बैठता था लेकिन ½ घंटे बाद कमज़ोरी की वजह से पीठ में दर्द होने लगता था । बाबूजी बैठे हुए होते थे, फिर भी मैं दर्द की वजह से उठकर साथ वाले कमरे में जाकर लेट जाता था । फिर थोड़ी देर से, शर्म सी लगती थी, कि बाबूजी बरामदे में बैठे हैं, और मैं लेट रहा हूँ । फिर मैं उठकर श्री बाबूजी के सामने कुर्सी पर बैठ जाता था । इस तरह यह सिलसिला (क्रम) दिन भर

चलता रहा । मुझे शर्म भी आती थी लेकिन कमज़ोरी की वजह से मैं मजबूर था ।

शाम को श्री बाबूजी ने मुझसे कहा, "देखो भाई, डॉक्टर ने हमसे कहा कि तुम्हारे में (बाबूजी में) physical energy बिल्कुल नहीं है । आप अब तक मर चुके होते परन्तु आप अपनी mental energy पर ज़िन्दा है ।"

"लेकिन हम बताते हैं, आदमी उसके बाद Sprirtual Energy पर ज़िन्दा रहता है ।"

अब मैं क्या कहता ? मैं चुप रहा । रात को खाना खाकर सो गया । सवेरे जब उठा तो मैंने देखा कि मेरे अंदर जो कमज़ोरी थी वह बिल्कुल नहीं थी । और मैं normal feel कर रहा था । मैं आश्चर्य और कृतज्ञता में डूब गया ।

17. दिल्ली में रहने की वजह से मुझे शाहजहाँपुर जाने का मौका अक्सर मिल जाता था । उन दिनों restrictions (बंदिशे) भी (1975-76 से पहले) कम थीं । मैं खुद भी जब मौका मिलता था, जाता था और औरों को भी जाने के लिए प्रोत्साहित करता था ।

एक बार, जब मैं, श्री ए. डी. जोशी जी के घर में रहा करता था, एक अभ्यासी भाई सेडम, गुलबर्गा से किसी निजी काम से दिल्ली आये थे और श्री ए. डी. जोशी जी के यहाँ पर ही ठहरे थे । मैंने उनसे पूछा, कि आप इतनी दूर से दिल्ली आये हैं, तो शाहजहाँपुर तो जा ही रहे होंगे ? उन्होंने कहा, "नहीं, मैं उस विचार से नहीं आया हूँ ।" मैंने कहा कि, "भाई, इतनी दूर आकर, शाहजहाँपुर श्री बाबूजी के पास न जाना आध्यात्मिक लाभ से वंचित रहना होगा । आप क्यों अपना Sprirtual Benefit खोना चाहते हैं ? मैं आपका

और मेरा rail का टिकट खरीद कर लाता हूँ और मैं आप के साथ आऊँगा । आप चलिए ।" वो राज़ी हो गये ।

मैं उनके साथ श्री बाबूजी के यहाँ, शाहजहाँपुर पहुँचा । पूजा (ध्यान) वगैरा हुई । उसके बाद हम लोग बरामदे में श्री बाबूजी के सामने कुर्सियों पर बैठे थे । श्री बाबूजी ने आवाज़ लगाई, "मुरलीधर, मुरलीधर" | श्री मुरलीधर जी एक निवासी अभ्यासी थे और सामने प्रिंटिंग प्रेस के साथ मिशन का ऑफिस था - उसमें कुछ काम कर रहे थे । उन्हें श्री बाबूजी की आवाज सुनाई नहीं दी क्योंकि ऑफिस का कमरा और बरामदे के बीच बड़ी दूरी है । बीच आँगन में ईटों का फर्श बिछा हुआ था ।

ईटों के बीच का सीमेंट उखड़ने की वजह से उसकी उसी दिन मरम्मत की गई थी और सीमेंट रेता की भराई (filling) अभी गीली थी ।

हमारे सेडमवाले अभ्यासी भाई झट से उठे और कहा कि मैं मुरलीधरजी को अभी बुलाता हूँ । और जल्दी जल्दी ऑफिस की तरफ चल पड़े । यह न देख पाये कि बीच आँगन में सीमेंट की भराई अभी गीली है और उससे बचकर निकल जाना चाहिए । भाई साहब की चप्पलें गाँववाली थीं जिसमें लोहे की नाल (horseshoe) और कीलें (rivets / spikes) ठोकी हुई थीं । अब वो उस गीले सीमेंट को कुचलते हुए चले गये । श्री बाबूजी देख रहे थे । अब मेरी तरफ मुड़ कर बोले, "अब बताओ, हम इन्हें Spirituality क्या सिखाएँगे ?"

18. एक बार मैं श्री बाबूजी के पास गया था । मुझे लगा कि यह पैर छूने की पद्धति क्यों है ? गीता में लिखा है, "उर्ध्वमूलमध:शाखम्" मतलब हमारा सिर मूल है और हाथ - पैर

शाखाएँ हैं । फिर हम शाखाओं को क्यों छूकर प्रणाम करते हैं, मूल को क्यों नहीं पकड़ते ? इत्यादि प्रश्न मेरे मन में थे । मैंने कहा, "बाबूजी, गीता में लिखा है, "उर्ध्वमूलमध: शाखम्, फिर हम पैर क्यों छूते हैं ?"

श्री बाबूजी ने कहा, "भाई, शास्त्रों में क्या लिखा है यह हम नहीं जानते । लेकिन हम अपना thought बताते हैं । यह सामने पेड़ देख रहे हो ? वो फुनगी देख रहे हो जहाँ फूल और फल लगता है, वहाँ energy maximum होती है जबकि इसकी जड़ें जमीन में है जहाँ से यह energy खींचती है । इसी तरह से हमारे पैर के अंगूठे में maximum energy होती है । पैर इसलिए छूते है कि हमें उनसे energy मिल जाय । लेकिन भाई, जब हम आपको energy ऐसे ही दे देते हैं, तो पैर छूने की क्या ज़रूरत है ?" फिर कहा, "हम अपना research बताते हैं । जब तुम थके हुए हो तो अपने अंगूठे पर meditate करो । थकान दूर हो जाएगी ।"

19. एक बार मैं शाहजहाँपुर का वास्तव्य पूरा होने पर दिल्ली जाने को तैयार हुआ । मैंने श्री बाबूजी से जाने की इजाज़त माँगी । बाबूजी ने कहा, "रुको, अभी ट्रेन में वक़्त है ।" उन्होंने आवाज़ दी, "मालीन, मालीन" लेकिन कोई नहीं आया । फिर वे अंदर घरमें गये और फिर बाहर आए । मुझसे कहा, " यहाँ आओ । ", मैं उनके पीछे चल दिया । एक कमरे में जहाँ डायनिंग टेबल, कुर्सियाँ थी, मुझसे कहा "यहाँ बैठो ।" मैं बैठ गया । फिर वे अंदर गये । कुछ देर में बाहर आये । हाथ में चायना की भारी प्लेट थी जिसमें सब्जी और पूड़ी रखी हुई थी । श्री बाबूजी उस प्लेट को दोनों हाथों से पकड़कर धीरे धीरे चल कर मेरी तरफ आ रहे थे। मैं फौरन उठ खड़ा हुआ । अरे यह क्या ! मेरे मालिक खुद अपने हाथ से खाना

लाकर मुझे खिलाना चाहते हैं । मैंने लपककर प्लेट ले ली । बाबूजी यह क्या ? पू. बाबूजी ने मुझसे कहा, "सामने फ्रिज में ठंडा पानी है, ले लेना ।"

मैं वह प्रसंग जिन्दगी में कभी भूल ही नहीं सकता ।

20. एक बार मैं शाहजहाँपुर आश्रम गया था। शाम को बाबूजी पधारे । ऑफिस में तख़्त पर 2 गद्दियाँ एक के उपर एक बिछी हुअी थी और दीवार के सहारे तकिया रखा था । हुक्का ज़मीनपर रखा था और हुक्के का लंबा पाइप दो गद्दियों के बीच दबाकर रखा हुआ था । बाबूजी महाराज तकिये के सहारे बैठे थे । और बीच बीच में हुक्के का कश लेकर, पाईप, फिर दो गद्दोंके बीच दबाकर रखते थे ताकि पाईप ज़मीनपर गिर न पड़े ।

मैंने देखा कि बाबूजी पाईप को हाथ लगा रहे हैं । मुझे लगा वे पाईप लेना चाह रहे हैं । मैंने भी पाईप को बाहर खींचने की कोशिश की । उस वक़्त पता लगा कि बाबूजी पाईप को अंदर को धकेल रहे हैं । एकदम बोले: "हम कुछ कर रहे हैं, तुम कुछ कर रहे हो ।"

मैं सहम कर चुप रह गया । अब भी जब याद आती है तो मेरी हँसी नहीं रूकती (अपनी बेवकूफी और बाबूजी की डाँट) ।

लेकिन क्या प्यार है उस डाँट में भी !

21. मैं एक बार पू. जीज्ञी (संत कस्तूरी बहनजी) के साथ बम्बई से नवसारी (गुजरात) जा रहा था । साथ में बहुत से अभ्यासी भी थे । मेरे बड़े भाई श्री विजयकुमार भी हमें बम्बई स्टेशन पर छोड़ने आये थे । रेलगाडी शुरू होने के बाद जीज्ञी ने मुझसे पूछा, "गायकवाड, क्या तुमने अपने भाई की condition देखी ?" मैंने

कहा कि, "मैं खुद ही अभी अपने आप से उपर नहीं उठा हूँ तो उनकी condition मैं क्या देखूँ जीज्ञी ? आप पहुँचाओगी तो ज़रुर पहुँच जाऊँगा ।" उन्होंने कहा, "अच्छा, अब की पहुँच जाओगे ।" मैं कुछ आश्चर्य से और कुछ उत्सुकता से अपनी हालत को देखने लगा ।

दिन का समय था । ट्रेन चल रही थी । सारे अभ्यासी जीज्ञी के साथ या आपस में बातचीत कर रहे थे । मेरे अंतर में मुझे एक दृष्य दिखाई दिया । एक नीले आकाश में एक छोटा सा सफेद बादल आया । बादल बड़ा होते होते सारे आकाश में व्याप्त हो गया । बादल सफेद सा था लेकिन उसमें कुछ चमक भी थी । और उसमें से शब्द होने लगा, "मैं वह हूँ, मैं वह हूँ ।" मुझे लगा जैसे श्री बाबूजी महाराज खुद कह रहे हैं कि "मैं वह हूँ ।"

मुझे कुछ अचंभा लगा । क्या यही ब्रह्माण्ड की हालत है ? सब अभ्यासी बैठे हुए थे, मैं जीज्ञी से पूछ न सका । बाद में इस बात का ख्याल न रहा ।

कुछ महीनों बाद मैं शाहजहाँपुर श्री बाबूजी के पास पहुँच गया । मैंने बाबूजी महाराज से मेरा उपरी अनुभव बताया और पूछा, "बाबूजी क्या यह ब्रह्मांड मंडल की हालत का अनुभव है ?" बाबूजी ने उत्तर दिया, "वह जो तुम्हें सफेद-सफेद सा दिखाई दिया ना, वह दिखना नहीं था । और method का तो तुमको पता है ही, cleaning का । और हमारे यहाँ बहुत आगे आनेवाली हालत की बहुत पहले ही झलक मिल जाती है ।"

22. एक बार मैं शाहजहाँपुर, श्री बाबूजी के पास, पहुँचा । उन दिनों आश्रम के निर्माण का काम चल रहा था । रेल्वे के इंजिनिअर हमारे अभ्यासी भाई श्री आर. के. गुप्ताजी, आश्रम की बिल्डिंग का structural design दे रहे थे । लोहा कितना लगाने से इमारत

सुरक्षित रहेगी इत्यादि । श्री गुप्ताजी उस दिन इलाहाबाद से आये थे । चूँकि अभी आश्रम बना नहीं था, इसलिए रहने की व्यवस्था श्री बाबूजी के घर पर ही थी ।

दोपहर का खाना खाने के बाद श्री गुप्ताजी, बाबूजी के पूजा वाले कमरे में सो गये । अभ्यासियों को सामान्यतः पूजावाले कमरे में सोने की मनाई थी । दोपहर का वक़्त था । अभी बाबूजी बरामदे में बैठे थे । साथ में अकेला मैं भी बैठा था । मुझे ये लग रह था कि भाई, जब पूजा के कमरे में सोने की मनाई है तो गुप्ताजी कैसे सो गये ? और बाबूजी ने कुछ कहा भी नहीं ।

मुझसे रहा न गया । मैंने कहा, "बाबूजी, गुप्ताजी अंदर सो रहे हैं ।" बाबूजी सहज ही बोले, "सोने दो ।" फिर मुझे ईर्ष्या लगी । मैंने कहा, "बाबूजी मैं इस साथवाले कमरे में सो रहा हूँ ।" बाबूजी बोले, "तुम कहीं भी सो जाओ ।"

मुझे कुछ ख़राब लगा । मैं सोचने लगा । तब उन्ही की कृपा से मेरा मन प्रकाशित हुआ कि "अरे भाई तुम तो घर के बच्चे हो, तुम कहीं भी सो सकते हो । गुप्ताजी से मुझे काम लेना है ।"

कितना अपनापन, कितना प्यार उनकी हर बात में झलकता था ।

23. सन 1974 की बात है । मैं पू. बाबूजी के पास शाहजहाँपुर पहुँचा । पूजा होने के बाद, बाबूजी के साथ मैं अकेला था ।

मैंने निवेदन किया : बाबूजी मेरे में selfishness बहुत है ।

बाबूजी बोले : नहीं । Selfishness नहीं है । जब याद sub-conscious में पहुँच जाती है, तो selfishness नहीं रहती ।

अब कृपासिन्धु बाबूजी के सिवा, 'उन' की याद sub-conscious में कौन डाल सकता है ?

24. एक बार बाबूजी से मैंने पूछा : "बाबूजी How to differentiate between spiritual experience and hallucination of mind ?"

बाबूजी बोले : "देखो, spiritual experience direct होता है, उसमें सवाल जवाब नहीं होते ।"

25. शायद 1975 की बात है । मैं पू. कस्तूरी जीञ्ञी के साथ, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु , महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, कलकत्ता, गौहाती, दिब्रूगढ़, तिनसुकिया और उ. प्रदेश के मिशन के कुछ centres घूम चुका था । बहुत सारे प्रिसेप्टर्स अपने अपने विचार जीञ्ञी के समक्ष अकेले में व्यक्त करते थे । मैं उनके साथ कायम ही रहता था इसलिए उन विचारोंसे मैं भी परिचित हो गया था । मुझे लगा कि ये लोग spiritually बहुत advanced तो हैं लेकिन इनके विचार, जरुरी नहीं कि पू. बाबूजी के विचारों से या आपस में मिलते हों ।

एक बार मैं बाबूजी के पास शाहजहाँपुर गया था । मैंने बाबूजी से कहा : "बाबूजी आप बहुत लोगों को Central Region में ले गये हो ।"

बाबूजी बोले : " तो ?"

मैंने कहा : "ये सब के सब अगर आप के खिलाफ हो गये तो आप क्या करेंगे ?"

बाबूजी मुस्कुराए और बोले : "अरे, वह चाबी हमारे पास है ।"

26. शायद 1975 की बात है, मैं दिल्ली में अपने कार्यालय में बैठा था। सवेरे 10.00 या 10.30 का वक़्त होगा। दिल्ली के प्रिसेप्टर श्री महाजन जी का फोन आया कि नवसारी से हमारे प्रिसेप्टर श्री देवरामजी चावड़ा जनता एक्सप्रेस से नई दिल्ली आ रहे हैं और शाम को लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर के लिए रवाना होंगे। उनका नई दिल्ली से शाहजहाँपुर का टिकट (महाजन जी ने रिज़र्व कर रखा था) उनके पास है और वे श्री देवरामजी को receive करने नई दिल्ली स्टेशन जा रहे हैं। गाडी दोपहर 12.30 बजे नई दिल्ली स्टेशन पहुँचती है।

मैं किसी देवरामजी को नहीं जानता था। और महाजन जी दिल्ली के प्रिसेप्टर हैं तो उनको receive करने जा ही रहे हैं। मुझे इससे क्या मतलब ?

कुछ देर बाद करीब 11 बजे मुझे बड़ी बैचैनी होने लगी। मैं इतना बैचैन हुआ कि ऑफिस में बैठना मुश्किल हो गया। मुझे लगा कि मुझे नई दिल्ली स्टेशन जाना चाहिए। मैंने श्री देवरामजी चावडा को कभी देखा तक नहीं था। न मुझे यह पता था कि वे किस डब्बे में सफ़र कर रहे है। लेकिन इससे क्या ? मैं स्टेशन पर महाजनजी से मिलूँगा और महाजनजी तो देवरामजी को जानते ही हैं।

मैंने ऑफिस में किसी से कुछ कहा नहीं और सीधे नई दिल्ली स्टेशन पहुँच गया। गाडी प्लेटफ़ॉर्म नं 1 पर आनेवाली थी। यह ट्रेन नई दिल्ली रुक कर फिर पुरानी दिल्ली (दिल्ली जंक्शन) पर समाप्त होती थी। मैं प्लेटफ़ॉर्म पर इधर उधर श्री महाजन को ढूँढ़ रहा था। वक़्त हो गया। गाडी प्लेटफ़ॉर्म पर पहुँचने की घोषणा हो चुकी थी। अब मैं और बेचैन हो उठा। उन दिनों mobile फोन नहीं थे। और फिर गाडी प्लेटफ़ॉर्म पर आ गई। अब मैं जल्दी जल्दी प्लेटफ़ॉर्म के एक सिरे से दूसरे सिरे तक महाजन जी को ढूँढ़ने लगा। महाजनजी

का कोई पता नहीं । इसमें काफ़ी वक़्त बीत गया । मैं निराश हो गया ।

अब श्री देवरामजी को ढूँढे कैसे ? मैं धीरे धीरे चलने लगा और सोचने लगा, अब क्या करें ? ऐसे ही एक डिब्बे के सामने कुछ गुजराती अखबार के खराब कागज़ बिखरे पड़े थे । मैं सोचने लगा ये गाडी बम्बई से निकलकर गुजरात (नवसारी वगैरा) होते हुअे नई दिल्ली आती है । और ये गुजराती अखबार के कागज़ यहाँ पड़े है । तो हो सकता है कि देवरामजी इसी डिब्बे में हों । मैं खड़े होकर कुछ सोच रहा था, इधर उधर देख रहा था लेकिन किससे और कैसे पूछे ? मेरे सामने डब्बे के दरवाज़े के पास 2-3 व्यक्ति खड़े थे । उनमें से एक ने मुझसे पूछा, "क्यों भाई आप किसको ढूँढ़ रहे हैं ?" मैंने कहा, "मैं देवरामजी चावड़ा को ढूँढ़ रहा हूँ ।" वे बोले, "मैं देवराम हूँ ।" मैंने मेरा परिचय दिया और कहा कि, "महाजन जी आनेवाले थे लेकिन वह दिख नहीं रहे हैं । आपकी रात की लखनऊ मेल का टिकट reserve हो चुका है और गाडी यहीं नई दिल्ली स्टेशन से चलती है और आपकी यह जनता एक्सप्रेस गाडी आगे पुरानी दिल्ली जाती है । इसलिए आपको यहीं फौरन उतरना है । जल्दी कीजिये क्योंकि गाडी चलनेवाली है । आपका सामान कहाँ है ?"

वह बोले, "भाई, मेरे साथ एक बायलर का crate है और वह वजनदार है ।" मैंने कहा, "कोई बात नहीं ।" मैंने 2 कुली बुलाये और वह गरम पानी के बायलर का crate उतार लिया । और उनका सूटकेस भी उतार लिया । यह बायलर आश्रम में अभ्यासियों के नहानेवाला पानी गरम करने के लिए वह ले जा रहे थे ।

मैंने कहा, "अब चलिए ।" मैं, बायलर का crate, जो काफी बड़ा और भारी था, कुलियों द्वारा cloak room में ले गया और वहाँ जमा करना चाहता था। क्योंकि रात की गाडी नई दिल्ली स्टेशन

से ही चलने वाली थी। Cloak room के क्लर्क ने कहा इसमें ताला नहीं है इसलिए इसे जमा नहीं किया जा सकता। कुछ बातचीत करके उनको समझा दिया और फिर उन्होंने boiler का crate जमा कर लिया।

मैं और देवरामजी ऑटो रिक्षा से श्री ए. डी. जोशी जी के घर गये। उन दिनों मैं उन्ही के साथ रहता था। नई दिल्ली स्टेशन से थोड़ी ही दूरी पर आराम बाग़ में उनका Govt.-Quarter था। श्रीमती ए. डी. जोशी Preceptor थीं और वे मुझे अपना बेटा ही समझती थीं। मैंने माताजी से कहा कि, "यह देवराम जी चावड़ा हैं। हमारे नवसारी सेंटर के प्रिसेप्टर हैं। इन्होने आज रात की लखनऊ मेल से शाहजहाँपुर जाना है। इनका टिकट महाजन जी के पास है। वे शाम को यहाँ आएंगे। इनको खाना खिलाईये। मैं ऑफिस जा रहा हूँ। मैं महाजनजी को अपने ऑफिस से फोन करूँगा।" मैं फिर ऑफिस चल दिया। श्री देवरामजी ने नहाकर, खाना खाकर आराम किया।

मैंने ऑफिस से महाजन जी को फोन किया तो पता चला कि उनके वरिष्ठ अधिकारीने उनको उसी वक़्त बुला लिया और जरुरी काम से रोक लिया जब वे नई दिल्ली स्टेशन जाना चाहते थे। मजबूरी थी।

शाम को मैं और महाजन, श्री ए. डी. जोशीजी के घर पहुँचे। जोशीजी भी तब तक आ गये। रात को खाना खिलाकर उनको हम उस बायलर के crate के साथ लखनऊ मेल में बिठा कर आ गये।

श्री देवरामजी को भी इस प्रसंग का बड़ा आश्चर्य हुआ। उन्होंने शाहजहाँपुर पहुँचने के बाद इस सारी घटना का विस्तार से

बाबूजी महाराज से बयान किया । और कहा कि गायकवाड नाम का अभ्यासी आया था ।

श्री बाबूजी सिर्फ मुस्कुराए ।

27. एक बार मैं श्री बाबूजी के पास शाहजहाँपुर गया था । बाबूजी बहुत प्रसन्न थे । वे अपनी विदेश (Europe) यात्रा के बारे में बताने लगे । बाबूजी महाराज Europe में एक अभ्यासी के घर ध्यान के कार्यक्रम के लिए गये थे । हॉल में बाबूजी बैठे थे । हॉल बड़ा था । एक European युवा आए । वह उन दिनों कुछ मन्त्र जाप, किसी के कहने पर, कर रहे थे । वह बाबूजी से बोले कि, "मैं ऐसा मंत्र जाप कर रहा हूँ लेकिन मुझे लगता है कि, इसका मेरे दिमाग पर असर हो रहा है । मैं क्या करूँ ?" बाबूजी ने कहा, "आप हमारा system try कीजिए, 3 महीनों के लिए । अगर फायदा हुआ तो continue कीजिए वरना छोड़ दीजिए । लेकिन जब आप हमारा system करेंगे, तब, वह जो आप कर रहे हैं उसे छोड़ना पड़ेगा ।" वह युवा विचार में पड़ गये । सोचने लगे कि अगर फायदा न हुआ तो यह भी नहीं मिला और वह भी। उन्होंने कहा, "तब तो हमारा loss होगा ।" बाबूजी ने कहा, "अब यह आप सोच लीजिए ।" वह युवा उठे और हॉल के कोने में दूर जाकर बैठ गये ।

थोड़ी देर बाद एक युवा लड़की आई । यह उसकी बहन थी । उन्हें यह सब पता न था कि उनके भाई यहाँ आये हुए हैं और बाबूजी से उनकी बातचीत हुई है । वह बाबूजी से बहुत ही प्यार करती थी और काफी devoted थी । कहने लगी, "बाबूजी मेरा भाई कोई मंत्र जाप करता है और वह पागल हो रहा है । उसे क्या करना चाहिए ?" बाबूजी ने कहा, "वह हमारा system try कर सकते है, 3 महीनों के लिए । अगर फायदा हुआ तो continue करें, वरना

छोड़ दें । लेकिन भाई, जब वो यह करेंगे तो वह जो करते हैं, वह छोड़ना पड़ेगा। अब इसकी जिम्मेदारी कौन लेगा ?" लड़की बोली, "बाबूजी I take the responsibility." बाबूजी ने उस लड़के की तरफ हाथ दिखाते हुए कहा, "तब तो वह ठीक है ।"

मुझे बाबूजी कहने लगे, "वह उसी वक़्त ठीक होने लगे । हम इसको Immediate Transmission कहते हैं । जब beyond time से transmission दिया जाता है, तो उसका effect फौरन होने लगता है ।"

मुझे कुतूहल था । मेरे दिमाग में हमेशा हमारे प्रिसेप्टर पू. श्री राघवेंद्रराव जी (रायचूर) रहते थे । मैंने बाबूजी से पूछा, "बाबूजी यह काम (Immediate Transmission) कोई प्रिसेप्टर भी कर सकता है क्या ?"

बाबूजी : "हाँ, हाँ अगर power है तो कर सकता है ।"

गायकवाड : "बाबूजी, आप की दी हुई power तो है ही ।"

बाबूजी : "लेकिन भाई, जब हम ऐसा काम करते है तो हमें लालाजी साहब का protection रहता है ।"

गायकवाड : "और बाबूजी, preceptor को भी आपका protection तो रहता ही है ।"

बाबूजी बोले, "वह हज़ारों में एक है, और हम एक में एक हैं ।"

अब इसके आगे मेरे कोई प्रश्न नहीं थे । मालिक ने अपने आप को reveal कर दिया ।

28. 1976 की बात है । बाबूजी महाराज से मैं दिल्ली में रो-रो कर प्रार्थना करता रहा कि वे मुझे अपना लें । बाद में मैं शाहजहाँपुर गया । बाबूजी महाराज बहुत प्रसन्न थे । उन्होंने मुझे अपना लिया ।

बाद में बोले, "क्यों भाई गायकवाड तुम अब तो खुश हो ?" मैंने कहा, "हाँ बाबूजी मैं बहुत खुश हूँ ।"

बाबूजी बोले: "तुम मिशन की किताबें पढो । हम तुमसे बहुत काम लेंगे ।"

मैंने ऐसे ही (लापरवाही से) "हाँ" कहा । लेकिन फिर बाबूजी की तरफ से ये खयाल आया कि "गुरु जो कहता है वह सच होता है ।"

29. सन् 1976 की बात है । मेरा ट्रान्सफर दिल्ली से हैदराबाद हो चुका था । पू. बाबूजी कुछ दिनों में दिल्ली पधारने वाले थे । मैंने सोचा कि थोड़े दिन छुट्टी लेकर दिल्ली रहूँ और बाबूजी को दिल्ली में मिलकर तब हैद्राबाद के लिए प्रस्थान करूँ । मैंने श्री बाबूजी को शाहजहाँपुर चिट्ठी लिखी कि मेरा स्थानांतरण हैद्राबाद हो चुका है लेकिन मैं छुट्टी लेकर आपकी राह देख रहा हूँ । आप दिल्ली आयेंगे तब आपसे मिलकर मैं हैद्राबाद चला जाऊँगा ।

जिस दिन बाबूजी कार से दिल्ली आनेवाले थे उसके पहले दिन मैं मोदीनगर, आदरणीय जीज्ञी (कस्तूरी जी) के पास, चला गया । यह सोचकर कि कल तो मैं आ ही जाऊँगा । मैं जब मोदीनगर से लौटा तो बाबूजी महाराज दिल्ली आ चुके थे । एक अभ्यासी भाई ने मुझे बताया कि बाबूजी पूछ रहे थे कि "गायकवाड कहाँ है ?" मुझे एकदम सदमा पहुँचा । मैंने बाबूजी को लिखा था कि मैं आपकी राह देख रहा हूँ और मैं मोदीनगर चला गया । गुरु महाराज को हमें प्रतिक्षा नहीं करवाना चाहिए । जब वे आयें, तो हमें उनके समक्ष हाजिर रहना चाहिए । Meditation में भी ।

30. उस वक़्त पू. बाबूजी हमारे अभ्यासी भाई श्री चोपड़ा जी के यहाँ ठहरे थे । और चोपड़ा जी का घर, मैं जहाँ रहता था, उसके बिलकुल पास था । शाम को चोपड़ाजी के यहाँ पूजा रखी थी । मैं भी चला गया । उनके सरकारी निवास पर शामियाना लगाकर पूजा की व्यवस्था की गई थी । गर्मी के दिन थे इसलिए शामियाने में बड़े खड़े पंखे (pedestal fans) की व्यवस्था की गई थी । लाईट्स की व्यवस्था भी थी ।

पू. बाबूजी ने पूजा शुरू की । मैं भी ध्यान में बैठ गया । ध्यान में मुझे खयाल आया, "बाबूजी मेरी उम्र 30 साल की हो गई है फिर भी मेरी शादी क्यों नहीं होती ?" कुछ देर बाद ध्यान में मैंने एक औरत का चेहरा देखा । उसके गले में रस्सी का फँदा पड़ा था । वह चेहरा आया और चला गया । पूजा आगे जारी रही ।

उस रात को श्री चोपड़ा जी ने मेरी ड्यूटी श्री बाबूजी के साथ लगाई कि मैं रात में बाबूजी के कमरे में सोऊँ । और जब बाबूजी रात में उठें और उन्हें बाथरूम में जाना हो तो लाईट जलाऊँ, उनके बाथरूम में जाने के बाद दरवाजा आगे कर लूँ ताकि बाबूजी दरवाजा अंदर से न बंद करें । और फिर बाद में वे वापिस लौटें तो बत्ती बंद करूँ । यह काम था । और बाबूजी की कुछ और जरूरत हो तो मैं attend करूँ ।

रात के 10 बज रहे थे । अभी कुछ अभ्यासी बाबूजी के कमरे में बैठे थे । मैं बाबूजी के पास कॉट पर जा बैठा । मैंने बाबूजी से ध्यान के दौरान जो स्त्री का चेहरा देखा, गले में फँदा था, वह अनुभव बताया और पूछा कि बाबूजी यह क्या बात है ? बाबूजी ने मुझसे पूछा, "उस वक़्त हम Transmit कर रहे थे क्या ?" मैंने कहा, "जी हाँ बाबूजी ।" बाबूजी ने अपना बायाँ हाथ पीछे की तरफ फेंकते हुए कहा, "होगी कोई चीज़ ।"

नहीं मालुम क्या था वह सब । लेकिन उसके बाद 1978 में मेरा ब्याह हो गया । ऐसे हैं हमारे गुरु महाराज जो एक इशारे में हमारे संस्कार निकाल देते हैं ।

31. इसी सामूहिक ध्यान के तुरंत बाद एक घटना घटी । हमारे विदेशी अभ्यासी श्री Don Sabourin बाबूजी के साथ थे । ध्यान समाप्त होने पर स्टँडवाले पंखे की दिशा ठीक करने के लिए Don ने पंखा उठाकर ठीक रखना चाहा । पंखे को हाथ लगाते ही उन्हें बिजली का जोरदार झटका लगा और वे वहीं गिर पड़े । बिजली बंद कर दी गई । सब हड़बड़ मची । बाबूजी को किसी ने बताया कि Don को बिजली का shock लगा है और वह गिर पड़े हैं । अब Don की नब्ज़, heartbeat कुछ भी नहीं थी । उनकी पत्नी भी साथ थी । बाबूजी मंच से उतरे । Don के पास आये । लोगों को दूर होने को कहा गया । बाबूजी उनके पास कुछ मिनिट ज़मीन पर उकडूँ बैठे । उसके बाद Don उठ गये । क्या और कैसे हुआ पता नहीं ।

इसके बारेमें श्री चोपडा जी की बेटी लॉली जो अब जर्मनी में रहती है, उसने विस्तार से "Beloved Remembered" किताब, जो श्री चारी जी ने प्रसिध्द की है, लिखा है ।

32. सन 1976 की बात है । मेरा स्थानांतरण हैद्राबाद ऑफिस में हुआ था । हैद्राबाद में आश्रम था और वहाँ स्थायी रूप से प्रिसेप्टर भी रहा करते थे जो हैद्राबाद केंद्र के Centre-in-charge थे । मैं वहाँ हर इतवार को सुबह पूजा में जाता था और हफ्ते के बीच जब बन पड़े तब भी जाता था ।

दि. 14 अगस्त आनेवाला था । सबको बताया गया कि 14 अगस्त के दिन, सुबह और शाम दोनों वक़्त सामूहिक ध्यान का आयोजन किया था । और यह वे हर साल करते थे । और फिर 14 अगस्त की पूजा हुई ।

1976 तक मैं कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, उ.प्रदेश, राजस्थान, आसाम, गुजरात आदि प्रदेशों के सेंटर्स पू. जीञ्जी संत कस्तूरीजी के साथ घूम चुका था । लेकिन किसी भी सेंटर पर 14 अगस्त को खासकर कोई सामूहिक ध्यान का आयोजन किया जाना मैंने सुना नहीं था । इसलिये मैंने Centre-in-charge प्रिसेप्टर साहबसे पूछा कि आप 14 अगस्त का दिन क्यों मनाते हैं ? उन्होंने कहा कि हम मनाते नहीं है बल्कि observe करते हैं । मैंने कहा, "क्यों ? 14 अगस्त तो पू. लालाजी साहब का महासमाधि दिवस है ।" उन्होंने कहा, "That day my Master became the Master."

मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा । मैं चुप रहा । उसके बाद कभी मेरा शाहजहाँपुर जाना हुआ । मैंने पू. बाबूजी से पूछा, कि हैदराबाद सेंटर में 14 अगस्त को सवेरे और शाम सामूहिक ध्यान का आयोजन करने की प्रथा (रिवाज़) है । और कई वर्षों से चली आ रही है । और ऐसा मैंने किसी और सेंटर में नहीं देखा ।

पू. बाबूजी बोले, "हैद्राबाद सेंटर को लालाजी साहब का महासमाधि दिवस observe करने से मना करना चाहिए । वो समझते हैं कि यह बहुत मामूली चीज़ है । लेकिन ऐसे मामलों में उन्हें हमसे consult करना चाहिए । हिन्दुओ में बर्थ डे मनाया जाता है । Death नहीं मनाया जाता क्योंकि उसमें कुछ न कुछ रंज रहता है ।"

श्री बाबूजीने कहा, "हम जब स्कूल में (10 th class) थे तब हमने लिखा था कि, All nations sing the songs of mourning, सिर्फ हिन्दू धर्म ऐसा है कि वह birthday की खुशियाँ

मनाता है । हमारे teachers बहुत कहते थे कि साहब अंग्रेजी लिखनेवाले तो बहुत मिलेंगे , लेकिन आप यह philosophical thoughts कहाँ से लाते हैं, पता नहीं ।"

मैंने वहाँ से हैद्राबाद के हमारे दूसरे प्रिसेप्टर साहब को चिट्ठी लिखकर पू. बाबूजी ने जो कहा, बता दिया । उन्होंने आगे Centre-in-charge प्रिसेप्टर साहबको बता दिया । उसके बाद हैद्राबाद सेंटर ने 14 अगस्त को सामूहिक पूजा करने की प्रथा बंद कर दी ।

हमारे मिशन की विचारधारा समझने में इस प्रसंग से हमें मदद मिलती है ।

33. एक बार मैं श्री बाबूजी के पास शाहजहाँपुर गया था । बरामदे में श्री बाबूजी अपनी आराम कुर्सी पर विराजमान थे । इतने में मालिन (उन के घर की पुरानी बूढी नौकरानी) घर के अंदर से आई और कहने लगी, "रूई चाहिए क्योंकि संजू (श्री बाबूजी का पोता) गिर पड़ा है और खून आ रहा है ।" श्री बाबूजी ने श्री गुंडेराव (नगनूर) जी को कहा, "इन्हें रुई दे दो ।" श्री गुंडेरावजीने कमरे से कुछ रुई लाई और मालिन को दे दी ।

थोड़ी ही देर में मालिन फिर आई और कहने लगी "रुई और चाहिए । इत्ती सी रुई दी है ।" श्री बाबूजीने गुंडेरावजी को और रुई देने के लिए कहा । श्री गुंडेरावजी ने बताया कि उतनी ही रुई थी और अब रुई ख़त्म है ।

श्री बाबूजी मेरी तरफ देखकर कहने लगे, "भाई, रुई तो घर में होनी चाहिए ।" 2-3 बार दोहराने के बाद मेरी समझ में आया कि, मुझे बाज़ार में जाकर medicated रुई लाना चाहिए । मैंने उठकर कहा, "बाबूजी मैं ले आता हूँ ।" बाबूजी ने पूछा, "तुम दुकान जानते

हो ?" मैंने कहा, "कोई भी फार्मसी की दुकान में मिल जाती है ।" और मैं चल पड़ा ।

सवेरे का वक़्त था । दुकाने अभी खुल रहीं थी । कुछ देर बाद एक pharmacy की दुकान खुली मिली । मैंने वहाँ से 2 रूपये की रुई और 5 रु. की Dettol की शीशी खरीदी और वापिस आया । श्री बाबूजीने पूछा, "यह शीशी किसलिए?" मैंने बताया जख्म को साफ करने के लिए । उन्होंने घर में देने के लिए कहा । मैं घर में दोनो चीज़ें दे कर, किसी काम से आश्रम चला गया । दोपहर के बाद जब मैं लौटा, तो हमारे प्रिसेप्टर श्री देवरामभाई चावडा कहने लगे कि, "अरे भाई बाबूजी महाराज आपको कब से याद कर रहे हैं । मैंने पूछा "क्यों ?" तो कहने लगे कि, "वो आपको रुई के दाम देना चाहते हैं ।" इतने में श्री बाबूजी आये। उन्होंने रुई के दाम पूछे। मैंने कहा, "दो रूपये । लेकिन इसकी क्या ज़रुरत है ?"

श्री बाबूजी कहने लगे, "हिसाब जौ जौ, बख्शीश सौ सौ ।" और अंदर जाकर 2 रु. लाए और मुझे दे दिये ।

मैं सोचने लगा, इसकी क्या ज़रूरत थी ? और अगर देना ही था तो मैंने 5 रु. की Dettol की शीशी भी तो लाई थी । मैं चुप रहा और सोचने लगा । कुछ देर के बाद उन्ही की कृपा से एक बड़ा रहस्य खुल गया । उन्होंने मुझसे Dettol लाने को तो नहीं कहा था फिर किसी को आपने कोई चीज़ लाने के लिए कही नहीं तो उसके दाम देना बनता ही नहीं और जिसने अवांछित चीज़ लायी उसके दाम की अपेक्षा करना गलत है ।

मेरा दिल कृतज्ञता से भर आया । इस छोटी सी घटना में श्री बाबूजीने मुझे कितना बड़ा व्यावहारिक सबक सिखाया ।

34. जब मैं रुई लाने के लिए बाजार में गया था (उपर निर्दिष्ट मौके पर) आकाश में बादल घिरने लगे । सारा आकाश बादलों से घिर गया । मेरी पत्नी को यह चिंता होने लगी कि अब जोरदार बारिश होगी और मैं भीग जाऊँगा ।

बाबूजी महाराज अपने कमरे में बैठकर कुछ काम कर रहे थे । वे उठकर बाहर आंगन में आये और आकाश की तरफ देख कर बोले, "बादल घिरे हैं लेकिन बरसेंगे नहीं ।" इतना कह कर बाबूजी फिर अपने कमरे में चले गये ।

बादल बरसे ही नहीं ।

35. एक बार मैंने श्री बाबूजी से पूछा, "बाबूजी, योगी Nature के laws को suspend कर सकता है ना ?" उन्होंने कहा, "हाँ temporarily suspend कर सकता है, लेकिन तुम अगर यह कहो कि सूरज पूरब के बजाय पश्चिम में उग जाय तो यह नहीं हो सकता ।"

36. एक बार श्री बाबूजी दिल्ली आये थे । उस वक़्त आप दिल्ली सेंटर के in-charge श्री सुंदरा जी के घर ठहरे थे । श्री सुंदरा जी ने अभ्यासी भाइयों को अपने घर पर सुबह 2-3 घंटे, और शाम को 2-3 घंटे आने की इजाज़त दी थी । सामूहिक ध्यान की व्यवस्था भी की थी । और भाइयों के साथ मैं भी श्री बाबूजी के आगमन का लाभ उठाने के लिए गया । श्री बाबूजी को प्रणाम करके बाहर हॉल में हम कुछ लोग बैठे थे । और कुछ लोग बाबूजी के कमरे में बैठे थे ।

इतने में कोई भाई मुझे बाबूजी के कमरे से बुलाने आये । कहा कि, बाबूजी आपको याद कर रहे हैं । मैं और भाई रामकृष्ण अंदर चले गये । बैठते ही श्री बाबूजी ने पूछा, "गायकवाड, तुम

गीता पढ़े हो ?" मैंने कहा "जी हाँ, थोडा-बहुत पढ़ा हूँ ।" बोले "तो बताओ गीता में लिखा है काम करो और result के बारे में मत सोचो ।" मैंने कहा, "हाँ बाबूजी, लिखा है, कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।" श्री बाबूजीने पूछा, "जानते हो ऐसा क्यों लिखा है ?" मैंने कहा, "लिखा तो है, लेकिन यह मैंने कभी सोचा ही नहीं कि ऐसा क्यों लिखा है ।"

बाबूजी बोले, "हम बताते हैं । देखो, जब तुम काम करते हो, तो विचार की धारा सिर्फ काम में लगी होती है । और जब result के बारेमें सोचने लगते हो तो दो धाराएँ हो जाती है, तो power divide हो जाती है ओर result न मिलने की possibility हो जाती है ।"

हम सब को यह सुनकर आश्चर्य और बहुत ख़ुशी हुई । क्योंकि हम सब यही सुनते आए थे "निष्कार्म कर्म" या कर्म को ईश्वर को समर्पित करना इत्यादि लेकिन ऐसा वैज्ञानिक स्पष्टीकरण हमने कभी सोचा भी नहीं था ।

मेरे साथ भाई रामकृष्ण भी थे । वे बहुत खुश हो गये । और एकदम से बोले, "Correct Babuji" ।

श्री बाबूजी महाराज मुस्कुराए और कहा "सुंदरा साहब आज बच्चों ने हमें certificate दे दिया ।"

37. शाम को बाबूजी महाराज हॉल में आकर बैठे । उन्होंने कहा, "देखो, realisation के लिए surrender बहुत ज़रूरी है । लेकिन भाई surrender तो बहुत बड़ी चीज़ है । हम आपको नुस्खा बताते हैं, dependency बढाओ, surrender अपने आप आ जाएगा । अभी करके देखो, अभी पता चलता है ।"

मैं alert हो गया । "अभी करके देखो, अभी पता चल जायेगा" यह तो मौक़ा है आज़माने का । मैंने फ़ौरन दिलमें एक विचार ले लिया कि, "बाबूजी मैं पूरी तरह से आप पर dependent हूँ ।" और अपने दिल को observe करने लगा । तुरंत ही मेरा दिल soft, soft होता गया । मेरा दिल कृतज्ञता से भर आया - "बाबूजी ! इतनी बड़ी चीज़ कैसे आपने चुटकी में अनुभव करा दी ।"

38. एक बार मैं शाहजहाँपुर पू. श्री बाबूजी के पास पहुँचा । बाबूजी में बहुत आकर्षण है । जो भी उनके सामने पहुँचता, उन्हें देखते ही रह जाता । निगाह हटती ही नहीं । मैं बाबूजी के सामने बरामदे में कुर्सी पर बैठा था । बाबूजी महाराज अपनी कुर्सी पर विराजमान थे । मैं उन्हें देख रहा था । देखते देखते कुछ विचार में डूब गया । जब मैं विचार में डूब जाता हूँ तो मेरी गर्दन अपने आप नीचे झुक जाती है । थोड़ी देर में मुझे भास हुआ कि बाबूजी की कुर्सी में कोई भी नहीं है । मुझे आश्चर्य हुआ । मैंने गर्दन उपर उठा के बाबूजी को देखा, तो बाबूजी तो अपनी कुर्सी में बैठे हुए थे । फिर मैंने अपने भास को नकारा और अपने विचार में फिर डूब गया । कुछ देर बाद फिर वही हालत । फिर लगा कि बाबूजी की कुर्सी में कोई नहीं है । फिर गर्दन उठा के देखा तो बाबूजी अपनी कुर्सी में थे । तीसरी बार मैंने जबरदस्ती अपनी गर्दन को नीचे किया। फिर वही अनुभव कि बाबूजी की कुर्सी में कोई नहीं है ।

तब मैं सोचने लगा कि श्री बाबूजी इस शरीर में हैं लेकिन शरीर में होते हुए वह अपने शरीर से परे (Beyond) हैं ।

39. एक बार मैं शाहजहाँपुर गया था । हमारे दिल्ली के प्रिसेप्टर श्री कृष्णास्वामी जी ने एक चिठ्ठी पू. बाबूजी को मेरे हाथ भिजवाई

थी । मुझे बाद में पता चला कि चिठ्ठी मेरे बारे में ही थी । श्री कृष्णास्वामी ने मुझे object of spiritual research चुनने के लिए पू. बाबूजी से इजाज़त माँगी थी ।

श्री बाबूजी spiritual research के बारे में मुझे समझाने लगे । उन्होंने कहा, "देखो भाई, हम यह बिल्ली, चूहे के उपर research नहीं चाहते । हमने जितनी भी research की है, सब की सब वक़्त बचाने के लिए की है । जैसे जिस हालत को पाने के लिए 500 साल लगेंगे उसको 5 मिनिट में कैसे किया जाय ?"

मैं सुनता रहा लेकिन मेरी नज़र घड़ी की तरफ थी । आश्रम पहुँचने का वक़्त हो रहा था और आश्रम की सूचना यह थी कि दोपहर 12 बजे तक सभी अभ्यासी खाने के लिए आश्रम में पहुँचने चाहिए । मुझे बाबूजी से डर नहीं लगता था लेकिन बाबूजी के आसपास जो preceptor रहते थे उनकी डाँट का डर लगता था । मैंने बाबूजी से कहा, "बाबूजी हमें आश्रम जाना चाहिए ।" बाबूजी एकदम गुस्सा हो गये क्योंकि वे spiritual research के बारे में समझा रहे थे । उन्होंने कहाँ, "जाना चाहिए तो जाना चाहिए ।" मेरी पत्नी भी उस वक़्त मेरे साथ थी; उसने मुझसे कहा, "बाबूजी कुछ बता रहे हैं उसे ध्यान से सुनिए ।" मैं लज्जित हुआ । फिर बाबूजी ने समझाना शुरू किया । लेकिन एकदम पहले वाले स्वर में, प्रेम के साथ । उसमें यह मालुम ही नहीं हुआ कि एक क्षण पहले बाबूजी की आवाज़ तेज़ थी ।

ऐसे हैं मेरे गुरु महाराज ! Real Teacher of Highest Calibre.

40. एक बार हम 10-12 अभ्यासी रात को 11 बजे बाबूजी के घर में गोल (circle) बनाकर बैठे थे । बाबूजी का हुक्का चल रहा

था । उन दिनों बाबूजी महाराज रात को देर तक हम लोगों को अच्छी अच्छी बातें सुनाते थे ।

बाबूजी ने पूछा : What is the most expensive thing in the world ?

हम सब चुप रहे । मैं सोचने लगा, शायद gold, नहीं नहीं, platinum, नहीं नहीं, हीरे । इत्यादि । लेकिन बोलने की हिम्मत न हुई । कोई भी नहीं बोला ।

बाबूजी ने कहा : War.

बाबूजी : यदि दुश्मन देश बलवान है तो उसे कैसे defeat (पराजित) किया जाए ?

हम सब चुप रहे ।

बाबूजी : Create Rebellion (विद्रोह पैदा करो) ।

फिर बाबूजी ने कहा, "भाई, लोग समझते हैं कि Nature का काम करने में हमें बड़ा मज़ा आता होगा । लेकिन, अगर हम आपसे यह कहें कि दो बाल्टी पानी भर लाओ, तो क्या आपको मज़ा आएगा ?"

फिर बाबूजी ने कहा, "देखो भाई अब हमने सब कुछ automatic कर दिया है ।"

मैं सोचने लगा 'सब कुछ' क्या automatic किया है ?

बाबूजी बोले, "कोई भी अभ्यासी दुनिया के किसी भी कोने में बैठकर प्रार्थना करे, हमें पता चले या न चले, उसका काम हो जाएगा ।"

क्या इस बात का हम लोग आज भी अनुभव नहीं कर रहे हैं ?

41. एक बार श्री बाबूजी महाराज श्री नसीबचंदजी (लखनऊ सेंटर के incharge) के घर ठहरे थे । मैं उस वक़्त लखनऊ गया था । कमरे में श्री बाबूजी cot पर बैठे हुए थे और मै ज़मीन पर बिछाई दरी पर बैठा था । कमरे में हम दो ही थे । बाबूजी बोले, "देखो, गायकवाड (अपने हृदय की तरफ उंगली करते हुए) यहाँ पर एक point है, पैसा पैदा करने का ।" मैंने निवेदन किया, "बाबूजी वह point रहने दीजिए । हमें जब ज़रुरत होगी, हम आपसे माँग लेंगे ।"

42. एक बार श्री बाबूजी महाराज हैद्राबाद आश्रम में कॉट पर बैठे थे । सारे अभ्यासी भाई-बहन, उनके सामने बिछी दरी पर बैठे थे । मेरे बड़े भाई श्री विजयकुमार, बाबूजी के सामने नज़दीक ही बैठे थे । बहुत देर तक मेरे भाई सोच रहे थे और जानना चाहते थे कि, बाबूजी उनके बारे में क्या सोचते हैं ? लेकिन प्रश्न पूछने की हिम्मत नहीं हो रही थी । और पूछे तो भी कैसे पूछें ? बहुत देर तक सोचने के बाद उन्होंने एक प्रश्न अपने मन में तय किया और पूछा, "बाबूजी, ईश्वर हमारे बारे में क्या सोचता है ?"

बाबूजी तकिया के सहारे टेक कर बैठे थे । एकदम से सामने की ओर झुककर बोले, "तुम जो अपने बारे में नहीं सोचते हो, वह तुम्हारे बारे में सोचता है ।"

सच भी, वह कृपासिन्धु बाबूजी, हम अपने कल्याण की जितना नहीं सोच सकते, उतनी दूर तक हमारे कल्याण की सोचते हैं ।

43. एक बार हमारे preceptor पू. श्री राघवेंद्राव जी, शाहजहाँपुर आने वाले थे। मैं दिल्ली में था। इसलिए वह, टिकट reservation के लिए, मुझे लिखते थे और ठहरते भी अक्सर हमारे पास ही।

मुझे उत्सुकता थी कि, एक अभ्यासी का गुरु महाराज के सामने क्या etiquette होना चाहिए ? और यह जानने के लिए यह मौका अच्छा था कि, श्री राघवेंद्रावजी बाबूजी के साथ कैसे अदब से बात करते हैं।

मैंने पू. बाबूजी को लिखा कि, इन दिनों में श्री राघवेंद्रावजी शाहजहाँपुर आ रहे हैं। आप कृपया मुझे भी उन्हीं दिनोंमें शाहजहाँपुर आने की इजाज़त दीजिए। बाबूजी महाराज की इजाज़त मिल गई।

मैं भी शाहजहाँपुर चला गया।

एक बार बाबूजी बरामदे में अपनी कुर्सी में बैठे थे। मैं, राघवेंद्रावजी और दूसरे अभ्यासी, उनके सामने बैठे थे। बाबूजीने पूछा : राघवेंद्राव यह बताओ कि हमारा system dynamic क्यों है ?

मैं सोचने लगा कि बाबूजी सहज मार्ग system, dynamic क्यों है, यह पूछ रहे हैं। मैं राघवेंद्राव जी की तरफ देखने लगा कि क्या जवाब देते हैं ?

राघवेंद्राव जी बोले : बाबूजी ! आप ही बताइए।

बाबूजी बोले : जब body का ज़र्रा ज़र्रा (कण-कण) divinise हो जाता है तो हमारा पूरा system, dynamic हो जाता है। और आप body के किसी भी हिस्से से transmit कर सकते हैं।

अब देखो, (उन्होंने अपनी तर्जनी रा. राव जी की तरफ करते हुअे कहा) हम अपनी उंगली से transmit कर रहे हैं। आ रहा है ?

राघवेंद्राव कुछ क्षण observe करते रहे और फिर बोले, "जी हाँ बाबूजी"।

बाबूजी ने कहा: आँखों से trasmission भर-भर, भर-भर (जल्दी-जल्दी) होता है ।

44. पू. बाबूजी के साथ मैं हमेशा free feel करता था । मुझे कभी भी उनसे डर नहीं लगा । मैं जो कुछ पूछना चाहता था, पूछ लेता था । ज्यादा से ज्यादा क्या होगा ? डाँट पड़ेगी । कोई बात नहीं । पिता होने के नाते वह उनका अधिकार ही है । और पूछ लेना मेरा अधिकार है । ऐसा है वह रिश्ता ।

बाबूजी एक बार बहुत खुश थे । कहने लगे, "देखो गायकवाड, तुम्हें कभी बुरे खयाल आये, तो हमारी तरफ फ़ेंक देना।"

उसके बाद एक बार मैं दिल्ली की बस में सफर कर रहा था । मेरे मन में बहुत कामुक विचार आये । उसी वक़्त बाबूजी का वाक्य याद आया । मैंने खयाल से उन ख्यालों को बाबूजी की तरफ फेंका । उसी वक़्त मेरे हृदय में कुछ गर्मी पैदा हुई और सारे खयाल गायब ।

ऐसे हैं मेरे गुरु महाराज ! संस्कार बनने नहीं देते, यदि हम ऐसा संबंध बना लें ।

45. एक बार मैं बाबूजी के सामने शाहजहाँपूर में बैठा था । बाबूजी ने मुझसे पूछा, "गायकवाड, तुम नियोग जानते हो ?" मैंने कहा, "जी, हाँ बाबूजी मैंने पढ़ा है ।"

बाबूजी बोले, "महाभारत में कहानी है, कि कुंती को वर मिला था कि, वह प्रकृति की ताकतों का आवाहन कर सकती थीं, जिससे उन्हें बच्चा पैदा हो सकता था । उन्होंने सूर्य देवता की शक्ति का आवाहन किया और उनसे उनको पुत्र "कर्ण" की प्राप्ति हुई ।

शरीर संबंध के बिना ही जब बच्चा पैदा होता है, तो उसे नियोग कहते है ।

बाबूजी ने कहा, " इसमें हम 99% successful है । जब कोई couple को बच्चा नहीं होता है, तो उस माँ की womb clean (spiritually) कर दो और उन दोनों को पति- पत्नी की तरह normal बरतने दो । हम इसमें 99% successful हैं ।"

46. मैं श्री राघवेंद्ररावजी को 1970 में पहली बार मिला । चूँकि मैं सोलापुर जिले में कार्यरत था, मेरा रायचूर जाना आना होता था। कुछ मुलाकातों में ही मुझे वह बहुत अच्छे लगने लगे । उनके गुण, उनका प्यार, उनकी बाबूजी के प्रति निष्ठा और हम अभ्यासियों की सदैव निगरानी और मदद । मैं 2 साल में ही उनका fan बन गया । उसके बाद 1972 की दिसंबर में, मैं R. E. C., New Delhi ऑफिस में डेप्युटेशन पर चला आया । अब मेरा रायचूर आना-जाना कम हो गया, लेकिन राघवेंद्रराव जी से लगाव बराबर बना रहा । चिठ्ठी-पत्री भी जारी रही । जैसे मेरे प्रिय राघवेंद्रराव जी मुझ पर छा गये ।

एक बार मैं पू. बाबूजी के पास (1973-74) शाहजहाँपुर गया था । मैं और बाबूजी हम दो ही लोग थे । किसी तरह श्री राघवेंद्रराव जी का विषय आया । मैं करीब-करीब ½ घंटा पू. बाबूजी को राघवेंद्रराव जी के गुण बयान करता रहा । बाबूजी भी सुनते गये, सुनते गये । आधे घंटे के बाद बहुत विनम्रता के साथ बाबूजी ने एक वाक्य कहा, "भाई, राघवेंद्रराव को भी हम ही ने बनाया है ।"

47. एक बार भाई रामकृष्ण और मैं शाहजहाँपुर गये थे । शायद 1978 साल होगा । आश्रम में ठहरे थे । वहाँ मेडिटेशन हॉल के सामने एक सुंदर फव्वारा है । फव्वारा जब चलता था तो साथ-साथ

अलग-अलग रंग के बिजली के बल्ब भी क्रमानुसार जलते थे । इससे फव्वारे के तुषार विविध रंग के दिखाई देते थे । आकर्षक दृश्य दिखता था । इलेक्ट्रिक बल्ब काँच के डिब्बे में सील थे ताकि, पानी बल्ब पर न गिरे । अब सील ख़राब होने से फव्वारा बंद रखा था ।

हमने (रामकृष्ण व मैं) सोचा कि यह सारे सील रिपेर हो सकते हैं । हमने बाज़ार से सामान खरीदा और बैठकर सारे सील ठीक कर दिये । फव्वारा चला कर देखा । सब व्यवस्थित हो गया था । जब बाबूजी से मिलने गये तो बताया कि अब फव्वारा ठीक हो गया है और चल रहा है ।

बाबूजी बहुत खुश हुए । बोले, "शाबाश, शाबाश, शाबाश !" कैसे वे अवसर देखते थे कि शाबाशी दी जाए, प्रोत्साहित करने के लिए ।

48. शायद 1982 की बात है । मेरी माँ बहुत बीमार थी और बंबई में K.E.M. अस्पताल में भरती थी । मेरे छोटे भाई डॉ. शशिकांत वहाँ पर M.B.B.S. के विद्यार्थी थे । भाई M.B.B.S. के student होने की वजह से उनके प्रोफेसर्स ने माँ के काफी टेस्ट्स, X Ray वगैरा किये । फिर एक 4-5 डॉक्टरों का medical बोर्ड बैठा । सबने विचार किया । सबका निर्णय यह हुआ कि इनकी आंतो में गाँठ है और गाँठ cancerous हो सकती है । इसलिए ऑपरेशन करके गाँठ निकाल देनी चाहिए । ऑपरेशन काफी देर तक चला । लेकिन जब पेट खोल दिया तो देखा कि आँत में गाँठ नहीं है बल्कि आँते गुथने से (twist) वह X Ray में गाँठ दिख रही थी । इसलिए फिर से पेट बंद कर दिया गया और फिर कुछ दिनों इलाज के बाद माँ ठीक होकर घर (सोलापुर) लौट आई ।

मैंने मेरे भाई से कहा, "यह कैसे तुम्हारे डॉक्टर लोग हैं ? बेकार में पेट इतना बड़ा फाड़ दिया ।" भाई बोले : "हमारे डॉक्टर्स इतना गलत नहीं हो सकते । बाबूजी महाराज को मैंने ख़त लिखा था कि cancer की संभावना है । और इसको आप ही ठीक कर सकते हैं । मुझे लगता है कि पू. बाबूजी ने इस केस में हस्तक्षेप किया है और माँ को बचा लिया है ।" मुझे लगा वह सही बोल रहे हैं ।

कुछ दिनों बाद श्री बाबूजी दिल्ली पधारे थे । श्री राजेश्वरप्रसाद माथुर (R.P. Mathur) जी के घर ठहरे थे । मैं सवेरे से आसपास ही इस ताक में था कि बाबूजी कुछ free मिलें तो मैं प्रसाद चढ़ाना चाहता था । दोपहर बाद करीब 4- 4 ½ बजे बाबूजी सो कर उठे और नहाकर (गर्मी के दिन थे) अपने कमरे में आए । मैं भी मिठाई लेकर पहुँच गया । बाबूजी धोती पहन रहे थे । मैंने बाबूजी से प्रार्थना की , "बाबूजी आप ज्यादा busy तो नहीं हैं ? आपने मेरी माँ को बचा लिया । मैं कुछ मिठाई लाया हूँ प्रसाद चढाने के लिए ।"

बाबूजी बोले : "भाई यह तो लालाजी की कृपा है ।"

बाबूजी महाराज की बातों में यह सूक्ष्मता थी कि जब वे कोई काम करते तो ओ "लालाजी की कृपा" कहते थे और जब कोई काम किसी के भाग्य से (अपने आप) हो जाता तो "ईश्वर की कृपा" कहते थे ।

फिर जोर से बोले : प्रसाद तुम भी चढ़ा सकते हो । कोई भी initiated अभ्यासी चढ़ा सकता है । लेकिन ठहरो, हम भी आ रहे हैं ।

फिर बाबूजी आये; प्रसाद चढ़ाया । मैं ख़ुशी से फूले न समा रहा था ।

49. एक बार श्री बाबूजी को शाहजहाँपुर से कलकत्ता (कोलकता) जाना था । वे कहने लगे कि "लम्बा सफ़र है और थकान हो जाती है ।" मैंने कहा, "बाबूजी आपको ट्रेन के बजाय हवाई जहाज से सफ़र करना चाहिए क्योंकि शाहजहाँपुर से कोलकता लम्बा सफ़र है।" बाबूजी अपना बायाँ हाथ दाहिने हाथ के बीच में रखकर मुझे लम्बाई दिखाते हुए बोले, "हवाई सफ़र में पैसा भी तो लम्बा लगता है ।" कितना ख़याल था उनको मिशन के खर्चे का !

50. एक बार बाबूजी बहुत खुश थे । कहने लगे, "एक बार हमने लालाजी साहब के एक शिष्य को ऊँची आध्यात्मिक हालत दे दी । लालाजी यह नहीं चाहते थे कि उनको उस वक़्त ऊँची हालत दी जाए । लालाजी नाराज़ थे ।

मैंने प्रार्थना की - `अगर तेरे चाहने वालों की मदद करना गुनाह है, तो मुझे माफ कर दे ।'

लालाजी मुस्कुराए ।"

51. एक बार मैं, हमारे दिल्ली सेंटर के अभ्यासियों के साथ शाहजहाँपुर गया था । पू. बाबूजीने हम सब को घर पर पूजा के कमरे में पूजा करवाई । हमारे साथ हमारे युवा अभ्यासी भाई श्री. रामास्वामी (रामजी) आये थे । वे नये अभ्यासी थे । उनके पिताजी प्रिसेप्टर थे । रामजी पू. बाबूजी के बिल्कुल सामने पूजा में बैठे थे । हम सब ध्यान में आँखे बंद कर बैठे थे । पूजा समाप्त होने पर पू. बाबूजी ने रामजी से पूछा, "घर पर पूजा करते हो ?" रामजी ने कहा, "जी हाँ बाबूजी ।"

बाबूजी ने पूछा : "कितनी देर करते हो ?"

रामजी : "आधा घंटा ।"

बाबूजी : "आधा घंटा पूजा कोई पूजा होती है ? 15-20 मिनट तो ध्यान लगने में ही लगते हैं ।"
बाबूजी ने अपने कंधे दायें और बायें झुकाते हुए कहा, "कभी यूँ करते हो, कभी यूँ करते हो, ये कोई पूजा हुई ? एक घंटा ध्यान, ठीक बैठकर करना चाहिए ।"

हम सब सुन्न रह गये ।

52. एक बार मैं श्री. बाबूजी के पास शाहजहाँपुर में था । बाबूजी नहाने से पहले अपने हाथोंसे हाथ - पैरोंमें तेल से मालिश कर लेते थे । उस दिन मैंने कहा, "बाबूजी लाईए मैं मालिश कर देता हूँ ।" और मैं उनकी पीठ में तेल लगाकर रगड़ने लगा । थोड़ी देर में मैं हाँफने लगा । बाबूजी बोले, "अरे तुम तो हाँफने लगे ।" फिर उन्होंने कहा, "खुद मालिश कर लेने से exercise भी हो जाती है ना ?"

53. एक बार श्री. बाबूजी बोले कि उनके पास एक हजार पुट का अभ्रक भस्म है । मुझे आश्चर्य हुआ क्योंकि यह बहुत दुर्लभ दवा है और बहुत असरदार भी । मैंने कहा, "बाबूजी यह बहुत दुर्लभ चीज़ है क्योंकि इसके बनाने में बहुत मेहनत और बहुत समय लगता है । यह दवा आपके पास कैसे आई ?"
[**टिप्पणी:-** एक पुट का मतलब अभ्रक को मिट्टी की हांड़ी में रखकर सील (बंद) किया जाता है । इसके बाद गोबर के 100 उपले (कंडे) की धीमी आग में उस हांड़ी को रातभर रखा जाता है । सवेरे हांड़ी निकाल कर उस अभ्रक की राख को आक (अकवन) के पौधे के दूध में खरल में खूब पीसा जाता है जब तक सारा दूध सोख न जाय । फिर उसको दूसरी बार मिट्टी की हांड़ी में सील कर के फिर पकाया जाता है । इस तरह एक हजार बार करने पर वह एक हजार

पुटवाला अभ्रक भस्म कहलाता है । यह सुई की (धागा डालने वाला सिरा) नोक पर जितनी दवा आती है, उतना उसका प्रमाण (dose) है ।]

श्री. बाबूजी ने कहा कि , शाहजहाँपुर में बाबूजी के पिताजी के समय एक मशहूर हकीम थे और वे रायबहादूर बद्रीप्रसाद जी (बाबूजी के पिताजी) के दोस्त थे । बाबूजी के पिताजी के पास घोड़े की बग्गी (घोडा गाडी) थी । कभी कभी वे अपने हकीम दोस्त को मिलने जाते थे । एक दिन एक आदमी हकीम साहब के पास आया और उनके घर, जो रिश्तेदार बीमार थे उनको देखने के लिए, हकीम साहब को चलने के लिए गुज़ारिश (बिनती) करने लगा । हकीम साहब किसी के घर मरीज़ (बीमार) को देखने नहीं जाते थे । वह गिड़गिड़ाने लगा । रायबहादूर साहब (बाबूजी के पिताजी) ने हकीम साहब से कहा चलिए, मरीज़ को देख लीजिए । तब हकीम साहब और रायबहादूर साहब घोड़े की बग्गी में बीमार को देखने गये । हकीम साहब ने मरीज़ को अभ्रक भस्म की दवा दी और कहा कि, "मरीज़ ठीक हो जाएगा लेकिन उसे मांसाहार मत दीजिए ।"

दो-तीन दिन के बाद फिर वह आदमी हकीम साहब के पास आया और कहने लगा कि मरीज़ की ज़बान बंद हो गई है और वह बहुत ख़राब हालत में है । हकीम साहब ने कहा, कि मांसाहार दिया होगा। तब हकीम साहब मरीज़ के घर गये और मरीज़ को अभ्रक भस्म चटाया । मरीज़ बोलने लगा । तब हकीम साहब ने कहा कि, "मैंने आपको यह बताया कि मैंने कितनी बढ़िया दवा दी थी । लेकिन अब यह मरीज़ बचेगा नहीं क्योंकि आपने इसको meat (माँस) खिलाया है जो मैंने मना किया था ।"

पू. बाबूजी के पिताजी ने हकीम साहब को कहा कि, "वह अभ्रक भस्म हमें भी थोड़ी दीजिए । हकीम साहब दोस्त थे इसलिए मना

कर नहीं पाए । भस्म की शीशी लम्बी थी । वह शीशी को काग़ज़ पर टेढ़ी करके थोड़ा थोड़ा डालने लगे । बाबूजी के पिताजी ने हकीम साहब के हाथ की कोहनी (elbow) को ऐसे धक्का दिया तो अभ्रक भस्म ज्यादा गिर गया । अब रायबहादूर साहब ने कहा, "अब गिर गया सो गिर गया ।" हकीमसाहब भी हँसने लगे ।

पू. बाबूजी ने कहा, "भाई वह अभ्रक भस्म हमने रखा है इसलिए कि कभी आप लोगों को ज़रूरत पड सकती है ।"

54. 1982-1983 की बात है । मेरा स्थानांतरण मुंबई ऑफिस में हो चुका था । किसी काम की वजह से मैं दिल्ली ऑफिस गया था । पू. बाबूजी महाराज उन दिनों बीमार रहने की वजह से दिल्ली में ऑल इंडिया इंस्टिट्यूट ऑफ़ मेडिकल सायन्स (AIIMS) में भर्ती थे । मैं श्री बाबूजी को देखने AIIMS में गया । नीचे ground floor में waiting hall में सारे अभ्यासी भाई-बहन बैठे रहते थे । दिन में 1-2 बार कोई बाबूजी के कमरे में जाकर (सिर्फ कुछ लोगों को इजाज़त थी) या डॉक्टर से बात करके बाबूजी के स्वास्थ्य के बारे में सभी अभ्यासी भाई-बहनों को सूचना देते थे ।

मैं उपर, श्री बाबूजी के कमरे में झाँकने के उद्देश से, चला गया । कमरे का दरवाजा बंद था और श्री. बाबूजी अंदर लेटे हुए थे । अंदर जाने की मनाही थी । दरवाज़े में एक कांच की खिड़की थी । उस में से झाँक सकते थे । मैं खिड़की से बाबूजी को देखता रहा । थोड़ी देर में लिफ्ट से श्री. एन. एस. राव (जो बाबूजी के वैयक्तिक सहायक थे) आये और दरवाजे के पास मुझे खड़ा देखकर प्रश्नचिन्हांकित मुद्रासे मुझसे पूछा, "Yes, Brother ?" मैं सहम कर एक तरफ हो गया । वह दरवाज़ा खोलकर अन्दर चले गये । मैं फिर कांच की खिड़की से झांकने लगा ।

दो-तीन मिनट में श्री. एन. एस. राव बाहर आये । उनके हाथ में एक बहुत बड़ा फूलों का हार था । शायद किसी अभ्यासी ने बाबूजी के लिए लाया होगा । मुस्कुराते हुए श्री. राव ने वह हार मेरे हाथों में रखा और कहा, "Brother, you keep this." मैं कुछ समझ नहीं पाया और कह भी नहीं पाया । वह हार लेकर मैं नीचे चल पड़ा । सोच रहा था कि इस हार का मैं क्या करूँ ? दूसरे दिन मुझे बम्बई वापस लौटना था । मैं नीचे waiting हॉल में गया । हमारी अभ्यासी बहनें वहाँ थी । उनको वह हार थमाते हुए कहा, "श्री. बाबूजी का है, आप लोग चाहे तो इसे बाँट लीजिए ।"
मैं चल पड़ा । उसके बाद दुबारा श्री बाबूजी को मैं शरीर में नहीं देख पाया । 19 एप्रील 1983 को उनके महासमाधि का समाचार आया । मुझे तब मालुम हुआ कि वह आखरी मुलाक़ात थी । उन्होंने मुझे फूल देकर बिदाई ली । धन्य हो मेरे बाबूजी महाराज !

55. दि. 26-7-78 की बात है । मैं और मेरी पत्नि शाहजहाँपुर में श्री. बाबूजी के पास गए थे । बाबूजी ने कहा,
a) "बिलकुल असलियत का एक drop भी दिया जाए तो कुल (संपूर्ण) transformation हो जाता है । लेकिन बिल्कुल असलियत का drop होना चाहिए ।"

b) "पहले जब बहुत ऊँचे दर्जे के गुरु होते थे, वह अपने ख़ास ख़ास शिष्यों में से किसी किसी को थोड़ी सी पॉवर देते थे । क्योंकि इससे वह (शिष्य) जैसा भी चाहे वैसे ही होने लगता है । यही लालाजी साहब की तरकीब हमने इस्तेमाल की ।"

c) "कस्तूरी ने हमसे कहा कि अपनी tongue कंट्रोल किया करें। जब हम मद्रास में थे, तब किसीने बढ़िया पेटी (belt) लाई थी (हर्निया बेल्ट) । हमने कहा, लाओ, हम पहन के देखें । कस्तूरी ने कहा कि वह आप के लिए थोड़े ही है । वह तो जिनकी आँते उतरती है उन के लिए है । हमने कहा, हमारी भी उतरने वाली है । और साहब, एक साल में आँते उतर गई । हालाँकि जब कहा था तब symptoms कोई नहीं थे ।"

56. शाहजहाँपुर में मैं बाबूजी के सामने था । दि. 4-1-1982 की बात है । कुछ फ्रेंच अभ्यासीगण भी वहाँ थे । श्री बाबूजी अंग्रेजी में बोले, उसका अनुवाद इस प्रकार है ।

a) कृपा वर्षाव 24 घंटे हो रहा है । देखिए और मालुम होगा कि आपकी हालत बदली हुई है या नहीं ।

b) अपने अनुभवों की टिप्पण्णी रखिए ।

c) सब कुछ सहज (स्वचालित) है । जब मालिक किसी को बुलाते हैं तो उन के अन्तर आत्मा की ओर ध्यान दिया जाता है, चाहे उस व्यक्ति को पता लगे या न लगे ।

d) जब मनुष्य वक़्त के पूर्व (beyond time) स्थितिपर पहुँचता है, तब सब कुछ तुरंत किया जा सकता है ।

57. a) मैंने श्री बाबूजी से पूछा : "बाबूजी सायन्स के तत्व, परिक्षण कर के निकाले जाते है या कोई मेधावी व्यक्ति अपने विचारोंके मंथन से उन तत्वों की खोज करता है ?"

श्री बाबूजीने कहा : "ऐसा कोई विशिष्ट नियम नहीं हैं ।"

b) दिव्य चेतना जब खुल जाती है तब मज़ा तो उस में है। जैसा चाहो वैसे कर सकते हो ।

c) चौदह साल की उम्र में फिलॉसफी का शौक था । स्टुडंट लाईफ में कुछ चीजें ऐसी आ जाती थी । अब भी हम स्टुडंट है ।

d) ध्यान से जीवन अवधि बढती है । पाश्चात्य देशोंमें यह विचार हमने दे दिया कि ध्यान से जीवन अवधि बढती है ।

e) हमारी नेचर (स्वभाव) कुछ ऐसी है कि हम बीमार देख नहीं सकते । इसलिए कुछ न कुछ करने को दिल चाहता है ।

f) Spiritual journey में thoughtless state आती है और जरूर आती है, तब साँस नहीं आती है । जब लोग प्राणायाम करते हैं तो thoughtless state आती है और साँस रुक जाती है ।

g) किसी ने हम से पूछा कि, "साहब आप तो अब मेडिटेशन नहीं करते ।" हमने कहा, "जिस चीज़ की खोज में हम थे वह जब मिल गई तो मेडिटेशन क्या खुदा के बाप पर करेंगे ? "

h) Disruptive चीजें जो हैं, हम उनको भूला देते हैं ।

i) हम खुद में अभ्यासी की कंडिशन पैदा कर लेते हैं, तब उस को study करते हैं और ठीक करते हैं ।

j) जितने दिन हम किसी country में रहते हैं, लोग चाहते हैं, क्योंकि हम उनको हँसाते रहते हैं ।

k) हम ने मर के देख लिया ।

l) North Pole देखने की हमारी इच्छा थी लेकिन उन्होंने (लालाजी साहब ने) मना किया ।

58. दि. 5-1-1982 का दिवस था । एक फ्रेंच अभ्यासी ने बाबूजी से पूछा :

प्रश्न : मुझमें आत्मविश्वास नहीं है ।

बाबूजी : यह पद्धति सरल है और यह आपको आत्मविश्वास प्रदान करेगी ।

प्रश्न: मेरी प्रगति नहीं हो रही है ।

बाबूजी : लेकिन मैं आपकी प्रगति देख रहा हूँ ।

59. a) काम हर वक़्त चल रहा है और उसका एक तरीका है ।

b) जब भूख (अध्यात्मिकता की) हो तो भोजन (आध्यात्मिक) भी होना चाहिए । इसलिए जब अभ्यासी को उत्कट इच्छा हो तो मालिक की 'कृपा' भी उपलब्ध हो ।

c) मैं अभ्यासी की हालत पढ़ सकता हूँ (यदि वह बहुत दूरी पर हो तब भी) लेकिन आप मेरे सामने हो तो अच्छी तरह से जान सकता हूँ ।

d) हमें 'सर्वोच्च अस्तित्व' का अनुभव करना चाहिए ।

e) विचारों के बारेमें एक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री बाबूजीने कहा, "वे अपना किरदार (भूमिका) निभा रहे हैं, आप अपना किरदार निभाईए ।

f) मानसिक कल्पना (Projection) भी दिव्यता से है लेकिन हमने उसे बिगाड़ दिया है ।

g) जब श्री बाबूजी योरप में थे, तो वहां किसी ने उनसे पूछा, "बाबूजी क्या आप जीसस क्राइस्ट हैं ?" बाबूजी ने जवाब दिया : "में कैसे हो सकता हूँ, जब मैं हूँ ही नहीं ।"

h) आप जैसा सोचें, वैसे वह (ईश्वर) बनता है ।

i) अभ्यासीने प्रश्न पूछा : विनाश कब शुरू होगा ?

बाबूजी : काम चल रहा है । परंतु मैं तारीख बता नहीं सकता । यदि आपमें प्रज्ञा चक्षु है तो आप देख सकते हैं ।

j) प्रश्न : बाबूजी क्या आप थकान महसूस कर रहे हैं ?
बाबूजी : थकान आती हैं और वहाँ (आकाश की ओर दिखाते हुए) चली जाती है ।

k) फ्रेंच अभ्यासी : बाबूजी आप जब खुश होते हो तो मैं भी खुश होती हूँ ।

बाबूजी : यह स्नेह का द्योतक है ।

l) फ्रेंच अभ्यासी : बाबूजी, जब आप बीमार हो या थके हुए हो, हमें क्या करना चाहिए ?

बाबूजी : उस वक़्त के लिए प्रार्थना काफ़ी है ।

फ्रेंच अभ्यासी : बाबूजी, क्या उस वक़्त हम सीधे लालाजी से प्रार्थना कर सकते हैं ?

बाबूजी : कल्पना अच्छी है ।

m) आप को ईश्वर की भाषा जानना चाहिए, तभी आप उस को जान सकते हैं ।

n) अनजाने में लेकिन निःसंदेह प्रार्थना से इच्छा शक्ति बढती है ।

60. एक बार मैं सोच रहा था कि राजयोग का मुख्य आधार, विचार और विचारशक्ति है । यदि कोई व्यक्ति पागल हो गया तो उसमें विचारशक्ति का उपयोग करने की क्षमता नष्ट हो जाती है । इसलिए वह राजयोग (सहजमार्ग राजयोग का विकसित रूप है) से अपना आध्यात्मिक विकास करने में तथा मुक्ति पाने में असमर्थ हो जाता है ।

मैंने श्री. बाबूजी से पूछा,"क्या पागलपना सब से बड़ी सजा है ?"

बाबूजी ने कहा, "कोई भी सजा सबसे बड़ी सजा हो सकती है ।"

61. एक बार हम सभी अभ्यासी श्री. बाबूजी के घर में, उनके सामने बरामदे में बैठे थे । समय शाम 4 — 4:30 बजे का होगा । चाय का वक़्त हुआ था । चाय के साथ छोटी-छोटी, गरम-गरम नमकीन पूड़ियाँ भी मिलती थी ।

एक अभ्यासी भाई उसी वक़्त पूजा के कमरे में जाकर पूजा में बैठ गये । चाय आ गई । श्री. बाबूजीने कहा, "अब देखिये, चाय का वक़्त है और आप ध्यान में बैठ गये हैं ।"

श्री बाबूजी और उनका समस्त परिवार हम अभ्यासियों की हर तरह सेवा करते थे । और हम में से कुछ लोग उनका खयाल किये बगैर, अपने ही विश्व में रहते थे ।

62. दि. 4,5 और 6 मार्च 1979 को श्री. बाबूजी के पास शाहजहाँपुर में मेरा रहना हुआ ।

श्री. बाबूजी ने कहा,

a) Feeling is the language of God(अनुभूति ईश्वर की भाषा है).

b) Both of them must know the art of intercommunication.(दोनों अन्तः सम्पर्क की कला जानते हो).

c) हमें लालाजी साहब से ज़रूरी बात करनी थी । लोग उनको घेरे बैठते थे । उनके लाइफ टाईम में हमने 3-4 बार intercommunication किया तो जवाब हमें मिल गये । लेकिन खयाल यह था कि यह उन की मेहरबानी थी कि उन्होंने grasp किया । इसके लिए Purity की ज़रूरत है ।

d) एक को पकड़ो ओर बहुत मज़बूती से पकड़ो । छोडो नहीं ।

e) Transmission is a way of doing (प्राणाहुति करने की विधि है).

f) दस उसूल जो हैं सब catching from God है । हमारा एक भी लब्ज़ (शब्द) नहीं । कलम-ए-इलाही (ईश्वर की लेखनी) ।

g) लालाजी साहब कहते थे, sensitiveness तुम past life से लाए हो इसलिए इसमें तुमसे कोई compete नहीं कर सकता ।

h) एक बार लालाजी साहब ख़त लिख रहे थे । हम (बाबूजी) खाली बैठे थे । ख़त लिखते लिखते उन्होनें तवज्जह(transmission) देना शुरू किया, हम (बाबूजी) फ़ौरन मुखातिब (attentive) हो गये । आँखे खुली थी ।

उन्होंने हम से कहा, "इन लोगों को (दूसरे अभ्यासियोंको) यह पता नहीं है कि मैं किस वक़्त तवज्जोह देता हूँ कि वह फ़ौरन (उसी वक़्त) मुख़ातिब (attentive) हो जाएँ । लालाजी ने बहुत दर्द भरी आवाज़ में यह कहा । कुछ आँसू से थे उनकी आँखों में ।"

63. हम जब Europe गये थे वहाँ की एक lady philosopher ने हम से कहा God realisation is most difficult. हमने कहा, "यह सब से सहल चीज़ है ।" उन्होंने कहा, "नहीं ।" हमने कहा

कि, "हमारे कहने से लोग attempt तो करेंगे लेकिन तुम्हारे कहने से (it is most difficult) लोग attempt भी नहीं करेंगे ।"

Q . Last stage of human consciousness ?
Babuji: God alone is perfect. Points A,B, C, D.... यह Trail तो ख़त्म ही नहीं होती, अब last stage को कैसे कहें ?

Q : Babuji, Love is God?

Babuji : No. Love is nearer to God.

सॉक्रेटिस ने कहा है, 'Love is the hunger of human soul for divine beauty'.

शेक्सपियर ने कहा है, 'Love is not love, which alters when it finds altercation'.

डॉ. सर्वेपल्ली राधाकृष्णन, 'Love is the force sent from heaven to earth so that the earth can aspire to reach heavenly heights one day'.

श्री. बाबूजी ने बताया, 'Love is inner awakening to Reality'.

64. श्री बाबूजी : डॉ. वरदाचारी (तिरुपति के) ने हमारी किताबों के बारे में कहा, "किताबें कितनी छोटी-छोटी लिखते हैं । कम से कम बड़े-बड़े ग्रंथ लिखते ।" श्री. कुमारस्वामी उन दिनों विजयवाडा में थे । 3-4 साल बाद जब श्री. कुमारस्वामी तिरुपती गये तो डॉ. वरदाचारी ने कहा कि, "साहब, उस में से एक word भी हम हटा नहीं सकते । अगर हटाएँगे तो meaning ख़त्म हो जाती है ।"

65. श्री बाबूजी : जब हम बोलने लगते हैं, तब खूब अंग्रेजी बोलते हैं । लेकिन जब तबियत नहीं होती, तब defective अंग्रेजी बोलते हैं ।

Q : When will West be spiritualised ?

बाबूजी : One Century. क्योंकि उनका trend of mind दूसरी तरफ रहता है ।

बाबूजी : एवज़ ले तो अच्छाई से । अगर कोई आदमी बुरा है तो उसके लिए prayer करे, यह line of thought होनी चाहिए न की डंडा मारने की line of thought हो ।

बाबूजी : जब हम beyond matter जाते हैं, तो science को हमने छोड़ दिया ।

बाबूजी : लंडन में हम से प्रश्न हुआ : 'Yoga और psychology में बड़ी और अच्छी चीज़ कौन सी है' । हमने कहा, "जो चीज़ आप के inner में है, वह योग बताती है ।"

यूरोप में किसी के प्रश्न पर बाबूजी ने कहा, "Co-operation और tolerance को कीजिए तो divorce नहीं होगा । और नहीं हुआ ।

Q : Perfect government किस को कहते है ?

बाबूजी : जहाँ हर individual perfect है ।

Q : God की defination क्या है ?

बाबूजी : Dog के reverse है ।

Q : Thought क्या है ।

बाबूजी : Rust of reality.

Q : दुनिया में worries क्यों हैं ?

बाबूजी : Worries are reserved for human beings and not for animals.

बाबूजी : आप अपनी creation को destroy करें । ईश्वर की creation आप destroy नहीं कर सकते । झूठ बोलना, temptation अपनी creation है, इसे destroy करो ।

बाबूजी : किताबे लिखते वक़्त हम reality से कभी अलग नहीं हुए ।

बाबूजी : राजयोग में research किसी ने नहीं किया लेकिन सब फिलॉसफ़र हो गये ।

बाबूजी : एक आदमी है । Philosopher है हैद्राबाद में । वे कहते हैं: एक आदमी इनके (बाबूजी के) साथ हमेशा होना चाहिए । जो ये कहें सब लिख लेना चाहिए ।

बाबूजी : Wisdom — शुद्ध चेतना ।

बाबूजी : सुधा गुप्ता क़ाबिल लड़की है ।

बाबूजी : Folly is wisdom क्योंकि बेवकूफ channel कम बनाता है ।

Q. ईश्वर प्राप्ति कब होगी ? एक फिलॉसफर ने तिरुपती में पूछा ।

बाबूजी : Turn your head that side and realisation is there, but don't come back.

बाबूजी : Immediate Transmission करने की किसी भी प्रिसेप्टर को permission नहीं देते । आप लोग सोचो । (Note : Immediate transmission is that in which the effect of the Sankalp (will) starts happening then and there).

'ईश्वर ने पृथ्वी पैदा क्यों की ?', यूरोप में प्रश्न हुआ । हमने 40 मिनिट कहा, subject था Divine Dynamics.

यूरोप के एक होटल में बाबूजी से सवाल हुआ :

'आप इतने अच्छे अच्छे thoughts extempore कहते जाते है । इसकी वजह क्या है ?'

बाबूजी : आप लोगोंके brain को आप के प्रोफेसर ने culture किया है और हमारे brain को एक योगी ने culture किया है जिसे हम लालाजी साहब कहते हैं ।

बाबूजी : Shall I tell you in one sentence what is Sahaj Marg ? मस्तिष्क जो कहे, वह हमें नहीं करना है । हम कहते हैं, वही मस्तिष्क से करवाना यही सहज मार्ग है ।

66. Dt. 5-3-1979, Shahjahanpur

बाबूजी :

a) Brain after (behind) brain is the real brain.

b) What is beyond mind is the realm of divinity.

c) बाबूजी : My brain works well in sprirituality but not in worldly matters. Of course if it is about mission, then it works.

d) Research on Mind : हमने रामजी सक्सेना वकील साहब को लिखवा दिया है ।

e) बाबूजी : People think that they are thinking of me. I am attracted by those who attract me. I am hungry of love. People say that they are praying for my health but their prayers do not reach me.

f) बाबूजी : लालाजी साहब की memory बहुत ही strong थी । दूसरों की memory हम तेज कर देंगे लेकिन खुद की नहीं कर पाते । Now I have to keep note. हालाँकि light किस point में है हम जानते हैं । खैर, हम अब कुछ और instrument निकालेंगे ।

g) Our method is complete in socialism.

h) Think of Him and He develops everything. So I first attempt the final thing and then everything automatically comes to me.

i) The President of India agreed that our method calms down the mind; and it helps socialism.

j) The food of Westerners is very natural. No spices, chillies etc.

k) बाबूजी : To collect Master's writings and publish His works is abhyasi's job.

l) Q : बाबूजी, हमारे दफ्तर (office) में atmosphere बहुत gross है ।

बाबूजी : ईश्वर की मदद ज़रूर मिलती है ।
लेकिन काम खराब खुद करे,
और लानत भेजे शैतान पर ।

m) बाबूजी : हमारे office में एक दफ्तरी (सीनियर peon) थे । वे बेकार ही कर्री बात करते थे । तो एक बार हमने उनसे मज़ाक किया । कहा कि, "रोजा इनके मुँह में है ।" तो वे बड़े खुश होते थे और चुप हो जाते ।

n) बाबूजी : "किसीने हमसे पूछा कि हमारी (बाबूजी की) हालत क्या है ?

हमने कहा कि साहब हमारी हालत तो बन बन के बिगड़ गयी ।"

o) लंदन में किसी 1st class journalist ने बाबूजी से प्रश्न पूछा :

Q : What is world?

बाबूजी : Hallucination of Being.

Sensed object. (Second definition of world given by Babuji).

p) डॉ. वरदाचारी ने पूछा था : "How can poets write such high thoughts which even philosophers could not write ?"

बाबूजी : जब वो (कवि) concentrate करते हैं तो soul से contact हो जाता है तो वे अच्छे thoughts लिख सकते हैं । वरना तो वे कवी जो हैं, सो ही हैं ।

q) बाबूजी : California से एक शख्स ने लिखा कि आपकी literature में सबसे बढ़िया किताब Efficacy of Raj Yoga है ।

r) बाबूजी : "अगर हम मज़ाक भी करते हैं तो भी उसमें कोई न कोई point होता है ।" बाबूजी के एक एक sentence पर एक volume लिख सकते हैं । जब साधना पूर्ण हुई तो तब लालाजी साहब से बाबूजी ने कहा कि, "साहब वह Philosophy वाली चीज़

तो आपने बंद कर दी थी । वह तो रह गई" । बाबूजी : "तो एकदम से light कहिए, या कुछ ,आ गई और सब चीज़ फिर revive हुई ।"

s) Alertness : " एक चीज़ को पकड़ो और ऐसा मजबूत पकड़ो कि छोडो नहीं ।" यह पर्शियन thought है । इसी से alertness भी आयेगी ।

t) Central Region से manifestation तक जो है, वह mind है ।

u) बाबूजी : Time is power. The effect of transmission from the point of time, is death. But it can be utilised for beneficial purpose also. When the work of nature of very high order comes, only a drop of that power can be used.

v) बाबूजी : जब downfall आता है तो दिमाग औंधा हो जाता है ।

w) बाबूजी : 'My Master' जर्मन में प्रकाशित हो चुकी । पैसे नहीं देने पड़े । लेकिन हमने rights छोड़ दिये । खयाल यह है कि चीज़ फैलना चाहिए । रुपये बनाने का कोई मन्शा नहीं है ।

x) बाबूजी : Unalloyed bliss is Reality.

67. Dt. 6-3-1979, Shahjahanpur.

बाबूजी : Desires जहाँ तक कम हो सके, betterment ज्यादा है । Points भी है कम करने के । लेकिन अभ्यासी के will से भी काम हो सकता है । पच्चीस साल से पहले की यह discovery है । दस बरस की कमी तो हम पूरी कर देंगे; आगे आप सब कर देख लें ।

बाबूजी : "पृथ्वी तत्व में ठोसता अधिक होगी, जल तत्व में कम । जल तत्व अच्छा कहा जाएगा ।" पू. बाबूजी ने कहा कि उनमें जल तत्व अधिक है ।

बाबूजी : "हर एक में कोई न कोई तत्व अधिक होता है । जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी और आकाश यह पाँच तत्व है । यह आदमी को read करने के लिए मदद देते हैं ।"

बाबूजी : "ईश्वर जिम्मेदारी देता है तो Power भी देता है । Meditation, Remembrance बहुत बहुत जरुरी है । Desires कम करते है ।"

Vibe of Denmark : Master, how are you ?

Babuji : I am as you think.

बाबूजी Denmark के अभ्यासियों के मोहब्बत की तारीफ कर रहे थे । जब वे Denmark गये तो वहाँ कमरे में सब कालीन बिछे हुए थे । बाबूजी को लगा कि हुक्के की चिन्गारी से कालीन जल सकता है ।

उन्होंने (Danish abhyasi ने) कहा कि जल जाने दीजिए ।

बाबूजी : जहाँ आपने मोहब्बत settle कर दी, वहाँ Centre establish हो गया ।

Q. Who are you ?
Babuji : I am what I ought to be.

Q : Who am I ?
Babuji : You are what you were.

Babuji : हम अपनी तरफ देखते है । Self की तरफ ज्यादा ख्याल रहता है । Diversion उनकी तरफ करना चाहिए ।

68. Date: 3-12-1979, Shahjahanpur.

बाबूजी : एक छोटा लड़का 14-15 साल का आया था । पैर छूने लगा । हमने कहा इनको फौरन अस्पताल में भर्ती कीजिए कि 24 घंटो के अंदर इसकी आँखे चली जाएगी ।
उन लोगों ने कहा कि साहब यह तो ठीक पढ़ते हैं । हमने बताया आप इन्हें फौरन ले जाईये । पैसे की कमी हो, तो हम से ले लीजिए। लोग अस्पताल ले गये और वहाँ डॉक्टरों ने वही बताया, कि 24 घंटो में न आते तो आँखे चली जाती। इलाज हुआ। हमे ख़ुशी हुई।

a) बाबूजी : अपने experiences आप बताईए ।

b) You are in my heart and not in my head (to an abhyasi of Denmark).

c) कोई Spiritual काम ऐसा नहीं जो हम एक मिनिट में न कर सके ।

d) मेसेज कोने कोने में पहुँचने का रास्ता तो बन गया ।

e) God has no mind.

f) God and man are interdependent.

g) Nearness to God कोई और (method & Master) नहीं पैदा करता ।

h) Time को काबू करने पर हर चीज़ पर काबू हो जाता है ।

i) A Russian has said that time is power.

j) Socretes : Know thyself.
Babuji : Forget thyself.
Babuji : Losing is gaining.

k) Babuji : Meditation increases lifespan. Man becomes almost thoughtless, then longevity increases. The breathing becomes dim and sometime stops almost. So it helps in increasing longevity.

l) Babuji : Realisation is death of death or end of end.

m) Babuji : हमने जाना तो ये जाना कि न जाना कुछ भी ।

n) Q : Who is God ?
Babuji : Whom you do not know.

o) Babuji : Sin is improper adjustment of things.
or
Unnatural living is sin.

69. Date 5-12-1979, Shahjahanpur.

a) बाबूजी : जब हम work करते हैं या बोलते हैं तो दिमाग में गर्मी पैदा हो जाती है ।

b) हम बहुत जल्दी जल्दी बातें करते भूल जाते हैं ।

c) सिर में, उपरी भाग में conscious state है । ऐसा मालूम पड़ता है कि वह कुछ dim पड़ गया है । डॉ. गँगलॉफ (Germany) का कहना है कि खून, brain में इतना नहीं पहुँचता, जितना काम में खर्च होता है ।

d) जब आश्रम बन रहा था (शाहजहाँपुर में 1976 में आश्रम का उद्घाटन हुआ), हमने will exercise की थी। फिर will है किसलिए ? लालाजी साहब की चीज़ बन रही थी।

e) (लालाजी साहब के बारे में) इतनी care न कोई लेता है न ले सकता है।

f) अब Power दी जा रही है जो राम और कृष्ण को नहीं मिली थी क्योंकि उस वक़्त उसकी जरुरत नहीं थी। लेकिन अब दी जा रही है।

g) किसी ने कहा कि साहब, पानी (rains) बरसा दीजिए कि हमारी वो (ईश्वर) सुनता ही नहीं। हमने कहा कि नालीश (मुकदमा) कर दीजिए अगर वो सुनता नहीं।

h) हमने लय अवस्था की copy की थी लालाजी साहब की। लय अवस्था दरस (दिख) गई थी। तीन मर्तबा, पाँच मिनिट। फिर लय अवस्था की copy खुद ब खुद होती चली गई।

i) अच्छी चीज़ हर एक की लेनी चाहिए और गुरु की ख़ास तौर पर।

j) Q : आपने कौन सी चीज़ की है जिससे आप की लालाजी में लय अवस्था प्राप्त हुई ?

बाबूजी : हम 2-3 मिनिट Meditation करते थे । हमने लालाजी साहब से बता दिया तो वह चुप हो गये । हमने इशारा समझ लिया (Lalaji approved it) ।

k) Sensitivity, automatic होती है तो ठीक है । Condition पर brood करने से भी sensitivity आती है, लेकिन soul की उतनी power उस तरफ लग जाती है ।

l) हम पहले बहुत मसखरे थे । लेकिन जब Mission में बड़े बड़े लोग आने लगे तो हमने कंट्रोल कर दिया ।

m) Denmark (Europe में) सब से अच्छा है ।

n) लालाजी साहब ने behavior पर बड़ा जोर दिया । हम ने एक बार उनको quote भी किया ।

o) बाबूजी : हर सेंटर (शरीर का) जो लय में रहे, तब आप चाहे जिस हिस्से से transmission कर सकते हैं इसलिए यह system, dynamic है । यह वहाँ तक पहुँचा सकता है ।

p) बाबूजी : Awakening state - सायुज्यता ।

q) बाबूजी : (Cancer के बारे में) केकड़ा खाने से कम हो जाता है । और सवेरे गाय के दूध का मट्ठा ।

r) बाबूजी : (सच और झूठ बोलने के बारेमें) हम हज़ार बार झूठ बोलेंगे लेकिन लोगोंके फायदे की चीज़ बताएँगे ।

s) बाबूजी : हर चीज़ पर काबू होना चाहिए और उसका misuse नहीं होना चाहिए ।

t) Q : बाबूजी, गुरु में सच्चा faith कब पैदा होता है ?

बाबूजी : जब अपने आप को भूल जाते हैं या कहिए, उनमें लीन हो जाते हैं ।

u) Q : What is the best service to the Mission or Master ?

बाबूजी : To know Master is the best service to the Master.

v) बाबूजी : (फोटो लेने के बारेमें) We should cover the outer and open the inner.

w) बाबूजी : पर्शियन thought - बेहुमा और बाहुमा । ईश्वर सबके साथ मिला हुआ और सबसे अलग भी है ।

बाबूजी ने लालाजी से कहा, कि हमारी (बाबूजी की) हालत बेहुमा और बाहुमा की है ।

x) बाबूजी : Grace का translation अभी तक किसी ने किया नहीं ।

'Sweetness of heart'.

y) Q : बाबूजी आपने बड़े लोगों को तैयार किया (Central Region वाले) ।

बाबूजी : लेकिन हुए कहाँ ?

z) बाबूजी : जिसमें knowledge ज़्यादा है, वह unknowledgeable हो जाता है ।

70. Date 25-7-1978, Shahjahanpur.

बाबूजी : Christ miracle दिखाते रहे । Miracle, आदमी का attention divert कर देता है ।

बाबूजी : We proceed from darkness to light and from light to grayness (dawn like colour) or smoky colour. फिर फैलते ही चले जाओ । रास्ता आसान मालूम होता है ।

बाबूजी : Happiness दूर से अच्छी मालूम होती है । नज़दीक से अच्छी चीज़ नहीं है । तेज़ी जरुर पैदा होगी । हमें एक चिठ्ठी आई थी जर्मनी से । उनको हमने एक drop, happiness की transmit की थी । उनकी चिठ्ठी आई । पढने लगे तो चक्कर आने लगे ।

बाबूजी : आर्यन (Aryan) civilisation पर्शिया (Iran) से शुरू हुआ । वैराग्य के बारे में उन्होंने भी लिखा है ।

बाबूजी : 14 साल की हमारी मेहनत बेकार गई । Tailbone पर हमने study किया था । हमारी याद ठीक नहीं रही । एकाध point याद आता है ।

बाबूजी : हमारी best book जो है, वह है *Ten Commandments* निदा-ए-गैब (उपर की आवाज़) वह सीधे उपर से उतरी है । I wrote the book *Ten Commandments* in three and half hours.

बाबूजी : I was interested in philosophy from the age of 14.

बाबूजी : My father was a poet.

Q.: ईश्वर की पूजा क्यों करें ।

बाबूजी : यह duty है । इसे साबित करने की कोई ज़रुरत नहीं ।

बाबूजी : Transmission करते वक़्त गुरु का सूक्ष्म शरीर (अभ्यासी के शरीरमें) साथ चला जाता है ।

बाबूजी : Time के बाद के point से transmission कर दें, तो फौरन effect शुरू हो जाता है । Circumstances पैदा होने में देर लगती है । Beyond time न संस्कार बनता है न कुछ ।

बाबूजी : हमारा ख्याल है कि किसी saint के miracle की तारीफ करना उसकी बदनामी करना है ।

बाबूजी : Disobedience यह बहुत बड़ी mistake है ।

बाबूजी : अल्लामियाँ (God) क्या Lalaji से अक्लमंद थोड़े ही है ?

बाबूजी : Light से हम disturbed feel करते हैं ।

***** हिंदी समाप्त *****